(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 52, अंक 9, मार्च,, 2017

मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

पाण्डव भवन (आबू पर्वत)- 81वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के उपलक्ष्य में शिवध्वजारोहण करने के पश्चात् समूह चित्र में राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी इशु जी, ब्र.कु.निर्वैर भाई, ब्र.कु.करुणा भाई, ब्र.कु.आत्मप्रकाश भाई तथा अन्य।

1

2

3

4

5

6

7

8

1.बोकारो- नवनिर्मित 'राजयोग भवन' का उद्घाटन करते हुए झारखण्ड की राज्यपाल महामहिम बहन द्रौपदी मुर्मू, जिलाधीश भ्राता आर. महिमापत रे, पुलिस अधीक्षक भ्राता वाई.एस.रमेश, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, ब्र.कु.शीलू बहन, ब्र.कु.रानी बहन, ब्र.कु.कुसुम बहन तथा अन्य। **2.कोलकाता-** ज्ञान-चर्चा के बाद बंगाल के राज्यपाल महामहिम भ्राता केसरीनाथ त्रिपाठी के साथ ब्र.कु.मुन्नी बहन, ब्र.कु.चन्द्रा बहन तथा अन्य। **3.भुवनेश्वर-** 'गीता का सार' विषय पर चर्चा करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु.गीता बहन, उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम भ्राता ए.सी.जमीर, ब्र.कु.बृजमोहन भाई तथा डॉ.पुष्पा पाण्डे। **4.पटना (कंकड़बाग)-** 'इन्नर पीस, इन्नर पावर' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बिहार के मुख्यमंत्री भ्राता नीतीश कुमार, ब्र.कु.शिवानी बहन, राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष भ्राता लालू प्रसाद यादव, ब्र.कु.रुक्मिणी बहन, ब्र.कु.डॉ.बनारसी भाई, ब्र.कु.संगीता बहन तथा अन्य। **5.बैंगलुरू-** 'केयरिंग इज हीलिंग' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कर्नाटक के चिकित्सा शिक्षा मंत्री भ्राता शरण प्रकाश पाटिल, कर्नाटक के चिकित्सा शिक्षा निदेशक डॉ.सचिदानंद, ब्र.कु.पद्मा बहन, ब्र.कु.सरोजा बहन, ब्र.कु.शिवानी बहन, ब्र.कु.डॉ.बनारसीलाल शाह तथा अन्य। **6.मेहसाना (खेरवा)-** नवनिर्मित "ब्रह्माकुमारीज़ डिवाइन रिट्रीट सेन्टर"का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु.हंसा बहन, ब्र.कु.सरला दीदी, ब्र.कु.शारदा बहन, ब्र.कु.दिव्यप्रभा बहन, ब्र.कु.सरला बहन, नगरपालिका प्रमुख बहन निमिषा पटेल, ब्र.कु.राजू भाई, ब्र.कु.तृप्ति बहन तथा अन्य। **7.जगन्नाथपुरी-** 'सत्यमेव जयते, अहिंसा परमोधर्म तथा श्रीमत भागवत् गीता' पर राष्ट्रीय संवाद कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.बृजमोहन भाई, तिरूपति नेशनल संस्कृत यूनिवर्सिटी के पूर्व उप-कुलपति प्रो.हरेकृष्ण सतपथी, श्री जगन्नाथ संस्कृत यूनिवर्सिटी, पुरी के पूर्व उप-कुलपति प्रो.आलेखचन्द्र सारंगी, श्री जगन्नाथ संस्कृत यूनिवर्सिटी, पुरी के उप-कुलपति प्रो.राधामोहन दास, ब्र.कु.डॉ.निरूपमा बहन तथा ब्र.कु.डॉ.प्रसन्न कुमार। **8.पालाकाड-** सेवाकेन्द्र के 20वें वार्षिकोत्सव का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.ऊषा बहन, ब्र.कु.बीना बहन, पद्मविभूषण डॉ.जी.माधवन नैयर, अविनाशी लिंगम यूनिवर्सिटी फॉर वूमन के कुलाधिपति पद्मश्री डॉ.पी.आर.कृष्णकुमार, नगरपालिकाध्यक्षा बहन प्रमिला शशिधरन, स्वामी चन्द्रदीपन ज्ञान तपस्वी तथा अन्य।

संजय की कलम से..

होली पर मन को लगाइये ज्ञान-रंग

हर वर्ष की भांति होली अब फिर आ गई है, लोग फिर एक-दूसरे पर रंग डालेंगे। रंग की जगह-जगह दुकानें खुलेंगी। करोड़ों रुपयों का रंग बिकेगा और करोड़ों लोग इस उत्सव को मनायेंगे। सरकार की ओर से भी इसे मनाने के लिए 'छुट्टी' होगी। एक दिन तो ऐसा भी आयेगा जब बस वाले भी काफी समय छुट्टी करेंगे परन्तु समझ नहीं आता कि इस दिन होता तो है हुड़दंग और लोग इसे नाम देते हैं 'होली'। यह तो वैसे ही हुआ जैसे कि रंगी को 'ना-रंगी' नाम देना या 'चलती' को 'गाड़ी' कहना! यदि कबीर साहिब के दिनों में यह त्योहार होता होगा तो वे भी इसे देख कर अवश्य रोये होंगे।

फिर, लोग कहते हैं कि हम आज 'होली' मनायेंगे! 'मनाया' तो वास्तव में उसे जाता है जो रूठा हुआ हो। परन्तु लोग हर आने-जाने वाले पर रंग डाल देते हैं जिससे कई लोग रूठ जाते हैं, नाराज हो जाते हैं! तो कैसी आश्चर्य की बात है कि जिससे लोग बिगड़ जाते हैं, उसे यह 'मनाना' कहते हैं। यह भी कैसा 'मनाना' है जिसके कारण सरकार घोड़े सवार और पैदल पुलिस तैनात करती है और समाचार-पत्रों में घोषणा करती है कि यदि कोई जबरदस्ती किसी पर रंग डालेगा तो उसके विरुद्ध सरकार कार्यवाही करेगी।

बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि लोग कहते हैं कि शिक्षा का प्रचार हो रहा है और शिक्षित लोगों की संख्या बढ़ रही है। पढ़े-लिखे लोगों को तो 'मनाने' शब्द का अर्थ मालूम होना चाहिए। करोड़ों रुपयों का रंग लोगों के कपड़ों पर डाल कर राष्ट्र की बहुमूल्य सम्पत्ति को नकारा किया जाता है जबकि देश में कितने ही लोग निर्धनता के कारण निर्वस्त्र हैं, तब इस प्रकार वस्त्रों को बिगाड़ना भला 'मनाने' शब्द का यह अर्थ कैसे हुआ? आने-जाने वाले पर गुब्बारा मारना तो गोया अपने मन का गुबार निकालने के समान हुआ, इसमें मनाने का तो भाव ही नहीं है। यदि गंवाना ही मनाना है, तब तो इन नए शब्दार्थ और शब्दकोष की शिक्षा ही अलग है।

होली शब्द का तो उच्चारण है, 'हो + ली' अर्थात् जो बात हो ली अब उसका चिन्तन न किया जाये। (शेष...पृष्ठ 30 पर)

अमृत-सूची

- श्रद्धांजलि *(राजयोगी ब्रह्माकुमार रमेश शाह का देहावसान)* 4
- यज्ञ रक्षक आप सा.. *(कविता)* ..5
- मुश्किलों के बीच मुसकान *(संपादकीय)* 6
- समझ में आ गया 8
- 'पत्र' संपादक के नाम 9
- श्रद्धांजलि.......................9
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के .10
- यू-टर्न.........................12
- किस्मत अर्थात् किस की मत .14
- श्रद्धांजलि 15
- मन का स्वास्थ्य 16
- जूती या टोपी..................17
- नारी-स्वर्ग का द्वार *(कविता)* ...19
- एकाग्रता......................20
- दान, महादान और वरदान 23
- पुण्यात्माओं के भाने...........27
- शान्तिवन में आकर 28
- विशेष सूचना..................28
- व्यवहारिक बोलचाल..........29
- बाबा ने सही सलामत 31
- सचित्र सेवा समाचार 32
- अभिमानी का अन्त 34

फार्म – 4

नियम 8 के अंतर्गत अपेक्षित पत्रिका का विवरण

1. प्रकाशन : ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड (राजस्थान)-307510

2. प्रकाशनावधि : मासिक

3. मुद्रक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
क्या भारत का नागरिक है? हाँ
पता – उपरोक्त

4. प्रकाशक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
क्या भारत का नागरिक है? हाँ
पता – उपरोक्त

5. सम्पादक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
क्या भारत का नागरिक है? हाँ
पता – उपरोक्त

सम्पूर्ण स्वामित्व : प्रजापिता ब्र.कु.ई.वि.विद्यालय

मैं, ब्र.कु. आत्म प्रकाश, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

(ब्र.कु. आत्म प्रकाश)
सम्पादक

श्रद्धांजलि

राजयोगी ब्रह्माकुमार रमेश शाह का देहावसान

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के अतिरिक्त महासचिव, वर्ल्ड रिन्यूवल स्प्रीचुअल ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी एवं गॉडलीवुड स्टुडियो के अध्यक्ष राजयोगी भ्राता रमेश शाह ने 28 जनवरी, 2017 को प्रात: 7 बजकर 23 मिनट पर बापदादा की गोद ली। वे 83 वर्ष के थे। लम्बे समय से किडनी समेत कई बीमारियों का उनका इलाज चल रहा था और पिछले एक महीने से यह इलाज ग्लोबल अस्पताल के ट्रोमा सेंटर में चल रहा था जहाँ उन्होंने अंतिम सांस ली।

आदरणीय भ्राता रमेश जी अथक सेवाधारी और बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे सन् 1953 में अपनी माता के साथ मुम्बई में संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के सम्पर्क में आये और सन् 1961 से ब्रह्माकुमारीज़ के साथ नियमित रूप से जुड़ गये। उनका जन्म 5 फरवरी, 1934 में गुजरात के भावनगर में हुआ। इनके पिता का नाम नानालाल शाह तथा माता का नाम शांता देवी था। ईश्वरीय ज्ञान के पारखी रमेश शाह जी ने नवीनता तथा शोध के माध्यम से ईश्वरीय सेवाओं को आगे बढ़ाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी।

वे संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के साथ मिलकर अमेरिका, जापान, लंदन, रूस, जर्मनी समेत अनेक देशों में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का प्रतिनिधित्व करते हुए ईश्वरीय ज्ञान का प्रचार-प्रसार करते रहे। पवित्र धन कमाने तथा उसके सदुपयोग पर अपनी लेखनी से क्रमवार लेख लिखकर लोगों को प्रेरित करते रहे। उन्होंने जब से ईश्वरीय मार्ग पर पैर रखा तब से पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा। आदर्श पारिवारिक जीवन की मिसाल रमेश भाई जी ने हमेशा राजा जनक के मिसल ट्रस्टी होकर ईश्वरीय सेवाओं को सम्भाला। चार्टर्ड एकाउंटेंट की परीक्षा में आप गोल्ड मेडलिस्ट थे। लौकिक एवं अलौकिक कायदों एवं कानून के प्रबल समर्थक थे। हमेशा ईश्वरीय संस्थान को दुनिया के सामने उज्ज्वल पानी की तरह ले जाना आपकी आदतों में शुमार था।

ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मुख्य वरिष्ठ भाइयों में से एक रमेश भाई जी दूरंदेशी बुद्धि थे। तन, मन, धन सब कुछ उन्होंने ईश्वरीय सेवा में लगा दिया। अपनी युगल उषा बहन के साथ हर स्थान पर ईश्वरीय सेवाओं में

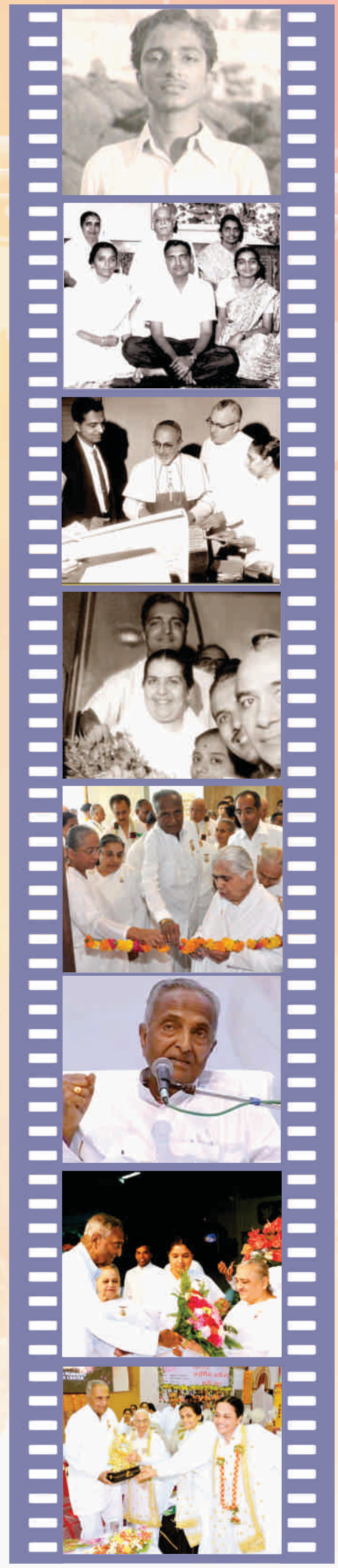

उपस्थित रहकर मार्गदर्शन करते रहे। इनके इन महान कार्यों को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र द्वारा इंटरनेशनल अण्डरस्टैंडिंग एंड फाईनेन्शियल मैनेजमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। वे केवल कानूनों के ही जानकार नहीं थे बल्कि ड्रामा के लेखक और गीत-संगीत-डांस के मार्गदर्शक रहे।

संस्था की विभिन्न गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण भूमिका तो निभाई ही, साथ ही भारत में अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय और देश-विदेश के सेवाकेन्द्रों पर आर्थिक पारदर्शिता के सूत्रधार थे। चाहे छोटा हो या बड़ा, हर किसी को कायदे के अनुसार चलाने के लिए तथा आगे बढ़ाने के लिए प्रयासरत रहे। रमेश भाई जी के प्रयास से, मुम्बई में ब्रह्माबाबा के निर्देशन में सन् 1964 में पहली बार आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जो मुम्बई में ईश्वरीय सेवाओं के विस्तार के लिए मील का पत्थर साबित हुई। आबू के साथ-साथ मुम्बई में रहकर, वर्ल्ड रिन्यूवल स्प्रीचुअल ट्रस्ट की जिम्मेवारियों का निर्वहन करते हुए महाराष्ट्र जोन की सेवाओं के विस्तार का मार्गदर्शन करते रहे। इनकी चार्टर्ड एकाउण्टेंट की सुप्रसिद्ध फर्म भी थी। इन सब सेवाओं की जिम्मेदारी सम्भालने के साथ ही अन्य कई महत्त्वपूर्ण पदों पर भी सफल निर्देशन करते रहे जो निम्नलिखित हैं –

1. सचिव, ब्रह्माकुमारीज एजुकेशनल सोसायटी
2. सचिव, राजयोगा एजुकेशन एवं रिसर्च फाउण्डेशन
3. अध्यक्ष, न्यायविद प्रभाग
4. अध्यक्ष, स्पार्क प्रभाग
5. सचिव, रेडियो मधुबन कम्यूनिटी सोसायटी 90.4 FM
6. निदेशक, कला एवं संस्कृति विभाग
7. प्रणेता, इंडिया वन सोलार थर्मल पावर प्लांट
8. ट्रस्टी, श्री शिव आध्यात्मिक फाउण्डेशन।

ऐसे महान आध्यात्मिक पुरुष तथा ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग के धनी भ्राता रमेश जी को हम सभी भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। ❖

यज्ञ रक्षक आप सा हम कहीं न पायेंगे

ब्रह्माकुमार सतीश, आबू पर्वत

आप अपनी खूबियों से याद हमको आयेंगे
'यज्ञ रक्षक' आप सा हम कहीं ना पायेंगे
बाबा–मम्मा, दादियाँ सब आपके गुण गाते हैं
आपकी सेवाओं का वर्णन ना हम कर पायेंगे।

यज्ञ के आधार स्तम्भ त्रिमूर्ति रत्न विशेष की
महिमामय आदर्श प्रवृत्ति प्रिय भ्राता रमेश की
गीतों की, चित्रों की, मेले और प्रदर्शनी
दूरदर्शी दिव्य बुद्धि सेवा के निमित्त बनी
विहंगमार्गी साधनों की गिनती ना कर पायेंगे।

आप सारे नियमों के, कानूनों के पाबंद थे
एकनामी–इकॉनामी करते आप पसंद थे
कहते किसे हैं पवित्र धन, आपसे पूछे कोई
विद्वान–बुद्धिमान देखा आप जैसा ना कोई
आपकी जो सोच थी हम सोच भी ना पायेंगे।

यज्ञ पर ना आंच आये, सजग तुम हर वक्त थे
एक पैसा व्यर्थ न हो इसलिए बड़े सख्त थे
गंभीर भी, रमणीक भी हम आप सा न पायेंगे
बातों–बातों में हँसाना, याद पल वो आयेंगे
देश और परदेश की सेवा भुला ना पायेंगे।

यूँ तो सेवा बाबा की ना रुकी–रुक पायेगी
यह कमी एकदम खलेगी जो नहीं भर पायेगी
सारे दैवी कुल की ये श्रद्धांजलि स्वीकारिये
चलिए आगे और आगे सेवा को बढ़ाइये
पीछे–पीछे आपके जल्दी ही हम आयेंगे...

सम्पादकीय

मुश्किलों के बीच मुसकान

जब जीवन में कोई समस्या आ जाती है और हमारे निर्धारित कार्य रुक जाते हैं या बिगड़ जाते हैं तो कई बार मन निराशा के गहरे गर्त में डूब जाता है और बार-बार सोचने लगता है कि मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ? कार्य तो कुछ पलों के लिए बिगड़ा होता है पर यह नकारात्मक सोच कई गुणा पलों को बिगाड़ने में लग जाती है। ऐसे में मानसिक शक्ति के ह्रास का मार्ग पूरी तरह खुल जाता है।

घटनाओं को आयी-गयी करना सीखें

घटना घटी और काल के उदर में विलीन भी हो गयी किंतु मन ने उसे पकड़ रखा है इसलिए वह बेचैन और भारी हो जाता है। भौतिक सृष्टि की एक घटना है छींक आना। वह आई और गयी, भूतकाल के साथ भस्मीभूत हो गयी। हमने उसे पकड़कर नहीं रखा। वैसे ही अपने द्वारा या दूसरों के द्वारा रची गई मानसिक सृष्टि में जो हलचलें होती हैं, उन्हें भी आयी-गयी करना हमें सीखना है। इस संसार में सब कुछ हमारे सोचे अनुसार नहीं हो पाता कारण कि कई बार हम ऐसी चीजों को आधार बनाकर आगे बढ़ने की योजना बना लेते हैं जो आधार स्वयं हिलने वाले, डगमगाने वाले और परिस्थितियों के अधीन होने वाले होते हैं। जब आधार ही कच्चा है तो भवन तो डगमगाएगा ही। ऐसे में अपने भाग्य को या भगवान को या अन्य किसी को दोष देने की बजाय अन्तर्दृष्टि विकसित करें।

साथी को साथ रखो

भगवान कहते हैं, ''ऊँची मंजिल पर पहुँचने से पहले आंधी-तूफान लगते हैं, स्टीमर को उस पार जाने के लिए बीच भँवर से क्रास करना ही पड़ता है इसलिए जल्दी में घबराओ मत, थको मत, रुको मत। साथी को साथ रखो तो हर मुश्किल सहज हो जायेगी। हिम्मतवान बनो तो मदद मिल ही जायेगी। सी फादर, फॉलो फादर करो तो सदा सहज ही उमंग-उल्लास का जीवन अनुभव करेंगे। रास्ते चलते किसी व्यक्ति या वैभव को अपना आधार नहीं बनाओ। जो आधार स्वयं ही विनाशी है, वह अविनाशी प्राप्ति क्या करा सकता है? 'एक बल एक भरोसा' इस पाठ को सदा पक्का रखो, तो बीच भंवर से सहज निकल जायेंगे और मंजिल को सदा समीप अनुभव करेंगे।''

अपने को बढ़ाने का हक है, दूसरे को गिराने का नहीं

हम किसी को मिटाकर कदापि बड़े नहीं बन सकते। हाँ, दूसरे को हानि पहुँचाए बिना, स्वयं का विकास तीव्रगति से कर सकते हैं। एक कक्षा अध्यापक ने श्यामपट्ट पर दो बिलकुल समान रेखाएँ खींचकर लड़कों की परीक्षा ली और कहा कि एक को दूसरी से छोटा करना है। कई आए और एक रेखा को थोड़ा मिटाकर छोटा कर दिया। केवल एक आया जिसने एक रेखा को बढ़ा दिया, दूसरी स्वत: छोटी हो गई। यह लड़का सृजनात्मक रहा। समाज में भी हमें अपने को बढ़ाने का हक है पर दूसरे को गिराने का नहीं। अपने को बढ़ाना सृजन है, दूसरे को गिराना विध्वंस है।

लहरें कभी रुकने वाली नहीं हैं

आगे बढ़ने के लिए उपयुक्त समय की राह न देखें। हर क्षण उपयुक्त है ही। कोई रुकावट नहीं होगी तब आगे बढ़ूँगा, ऐसा सोचने की बजाय यह सोचें कि आगे बढ़ूँगा तो सारी रुकावटें हट जाएँगी। एक व्यक्ति समुद्र में स्नान करने गया किन्तु स्नान करने की बजाय किनारे पर बैठा रहा। किसी ने पूछा, स्नान करने आए हो तो किनारे पर क्यों बैठे हो? उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, इस समय समुद्र अशान्त है,

इसमें ऊँची-ऊँची लहरें आ रही हैं, लहरें बन्द होंगी और समुद्र शान्त होगा, तभी स्नान करूँगा। पूछने वाले को हंसी आ गई, बोला, भाई जी, समुद्र की लहरें कभी रुकने वाली नहीं हैं, ये तो आती ही रहेंगी। लहरों के थपेड़े सहे बिना समुद्र-स्नान कभी नहीं हो सकता। यह हम सबकी कथा है। संसार समुद्र के समान है, इसमें बाधा रूपी तरंगें निरन्तर उठती ही रहेंगी। उनके बन्द होने का इन्तजार ना करें, आगे बढ़ें, वे स्वत: ही रास्ता छोड़ देंगी।

क्या है आलोचना?

प्रशंसा या आलोचना – दोनों को उन्नति के मार्ग में बाधा न बनने दें। प्रशंसा सुनकर फूल गए तो भी पुण्य का खाता क्षीण होगा और आलोचना सुनकर उत्तेजित हो गए तो भी पुण्य का खाता घटेगा। अत: अनदेखी करें अपने गुणों के बखान की और दूसरे के अवगुणों के बखान की । आलोचना क्या है? जो लोग जीवन-यात्रा की रुकावटों से थककर खड़े हो जाते हैं, आगे नहीं बढ़ पाते, वे राह के किनारे खड़े होकर औरों पर पत्थर फेंकने लगते हैं ताकि वे भी रुक कर उन जैसे बन जाएँ पर समझदार लोग इनकी अनदेखी कर यात्रा जारी रखते हैं। प्रशंसा-आलोचना के कारण हैं राग-द्वेष। जिससे राग है उसमें दोष और जिससे द्वेष है उसमें गुण दिखाई नहीं देते। स्वामी विवेकानंद ने कहा है, ''यदि मेरी कई कमियों के बावजूद मैं अपने आपसे प्रेम कर सकता हूँ तो दूसरों को भी उनकी कमियों के बावजूद प्रेम कर लेना चाहिए।''

समस्याओं को एक तरफ रख, जीवन का आनन्द लें

एक आदमी हर समय किसी न किसी समस्या से परेशान रहता था। एक बार वह एक महात्मा से मिला और बोला, बाबा, समस्याएँ मुझे घेरे रहती हैं, कोई ऐसा उपाय बताइये कि जीवन से सभी समस्याएँ खत्म हो जाएँ और मैं चैन से जी सकूँ? बाबा मुसकराये और बोले, हमारे काफिले में सौ ऊँट हैं, मैं चाहता हूँ कि आज रात तुम इनका ख्याल रखो। जब सौ के सौ ऊँट बैठ जाएं तो तुम भी सो जाना। अगली सुबह महात्मा ने उस आदमी से पूछा, कहो बेटा, कल कैसा रहा? वो बोला, बाबा, मैंने बहुत कोशिश की पर सभी ऊँटों को नहीं बैठा पाया, कोई न कोई खड़ा हो ही जाता था। बाबा बोले, बेटा, जैसे सारे ऊँट एक साथ नहीं बैठ सकते, एक को बिठाओगे तो कोई दूसरा खड़ा हो जाएगा, इसी तरह तुम एक समस्या का समाधान करोगे तो किसी कारणवश दूसरी खड़ी हो जाएगी...पुत्र, जब तक जीवन है, समस्याएँ तो बनी ही रहेंगी, कभी कम तो कभी ज्यादा। समस्याओं के बावजूद जीवन का आनंद लेना सीखो। कल रात क्या हुआ? कई ऊँट रात होते-होते खुद ही बैठ गए, कई तुमने अपने प्रयास से बैठा दिए। समस्याएँ भी ऐसी ही होती हैं। कुछ तो अपने आप ही खत्म हो जाती हैं, कुछ को तुम अपने प्रयास से हल कर लेते हो। कुछ तुम्हारे बहुत कोशिश करने पर भी हल नहीं होतीं, ऐसी समस्याओं को समय पर छोड़ दो, उचित समय पर खुद खत्म हो जाती हैं। जीवन है तो कुछ समस्याएँ रहेंगी ही रहेंगी पर इसका यह मतलब नहीं कि तुम दिन-रात उन्हीं के बारे में सोचते रहो। समस्याओं को एक तरफ रखो और जीवन का आनंद लो, चैन की नींद सोओ।

यह सुनकर व्यक्ति के मन का सारा बोझ उतर गया। उसने समस्याओं के बीच मुसकराना सीख लिया। किसी ने सही कहा है, समस्याएँ ट्रैफिक की लाल बत्ती की तरह होती हैं, थोड़े इन्तजार के बाद बत्ती रंग बदल लेती है अर्थात् हरी हो जाती है, इसी प्रकार थोड़ा धैर्य रखने के बाद समस्याएँ भी रूप बदल लेती हैं।

हरेक को स्वीकार कर उससे फायदा उठा लें

बिजली को छूने से शॉक लगता है और आग को छूने से हाथ जलता है। हम कभी प्रयास नहीं करते कि बिजली अपना स्वभाव बदले या आग ठण्डी हो जाए। हमने स्वीकार कर रखा है कि बिजली और आग की प्रवृत्ति ही ऐसी है। इस स्वीकार्यता के साथ हमारा प्रयास रहता है कि

हम इनसे फायदा भी उठा लें और दुष्परिणाम से भी बचे रहें। इसी प्रकार संसार में हर व्यक्ति अपने-अपने संस्कार लिए हुए है। हम उन्हें स्वीकार कर उनसे फायदा उठा लें और अपना सारा ध्यान अपने को बदलने पर केन्द्रित कर लें।

भगवान कहते हैं, ''जितना बड़ा संगठन, तो बातें भी तो इतनी ही होंगी ना। यह नहीं सोचो, बातें खत्म हों तो बाप याद आए लेकिन बातों को खत्म करने के लिए ही बाप की याद है। बातें खत्म ही तब होंगी जब हम आगे बढ़ेंगे। ऐसे नहीं, बातें खत्म हों तब हम आगे बढ़ें, हम आगे बढ़ेंगे तो बातें पीछे हो जाएंगी। रास्ता नहीं आगे बढ़ता है, चलने वाला आगे बढ़ता है। साइडसीन नहीं आगे बढ़ेगी लेकिन देखने वाला आगे बढ़ेगा।''

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

समझ में आ गया कुण्डली का राजयोग

योगगुरु कल्किराम, भीलवाड़ा (राजस्थान)

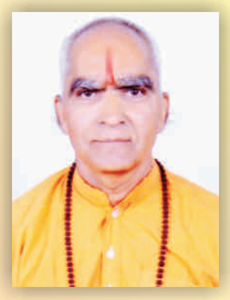

मुझे दिनांक 22 से 26 नवम्बर, 2016 तक शान्तिवन में होने वाले 'संत सम्मेलन' में भाग लेने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। अपार शान्ति, आनंद का अनुभव हुआ, साथ ही जो आभास और दर्शन हुआ वह बहुत ही चमत्कारी था।

पहले दिन के स्वागत-सत्र में सम्मान और प्रेम का अनूठा आनंद था। दूसरे दिन के प्रात: 6.30 से 8.00 बजे के योग में अपार शान्ति का अनुभव हुआ। ऐसा अनुभव पहले कभी नहीं हुआ। बाबा से उसी वक्त मन ही मन शिकायत कर दी कि आपने इतना लेट कैसे बुलाया? मेरी उम्र 65 वर्ष हो गई। इतना समय बेकार निकल गया। इसकी क्षतिपूर्ति कैसे होगी?

तीसरे दिन प्रात:कालीन योग में स्मरण हुआ कि जब मैं पढ़ता था तब एक पंडित ने मेरी छपी हुई कुंडली देखकर बताया था कि आपके जीवन में राजयोग लिखा है। पढ़ाई पूरी हुई तो सरकारी सेवा में लगा, तब सोचा कि राज की नौकरी लगने को ही राजयोग कहते हैं। लेकिन 2010 में जब सेवानिवृत्त हुआ तो सोचा, यह राज का योग तो यहीं पूरा हो गया पर जीवन तो अभी बाकी है। जब डायमण्ड हॉल में राजयोग किया तब छपी हुई कुण्डली का राजयोग समझ में आया। आत्मा क्या है, इस सत्र में जाना।

चौथे दिन प्रात:कालीन योग में ऐसा लगा कि यहाँ साक्षात देवियाँ विराजमान हैं। यहाँ साबित हो जाता है कि नारी अबला नहीं, सबला है। हाँ, बाबा के दरबार में आती हैं तब भले ही कहती हैं, बाबा हम आ गई, अब-ला हमको आनन्द और प्रकाश दे लेकिन जब कुछ दिन बाद समय बदलता है और लगता है कि जो बाबा का है वो सब हमारा ही है तब कहती हैं, बाबा सब-ला। परमात्मा क्या है, वह इस सत्र में जाना।

पाँचवें दिन के सत्र में जब आत्मा से परमात्मा का मिलन प्रसंग चल रहा था तो स्टेज से सीधा एक सितारा मेरी ओर आया जैसे थ्री डी पिक्चर में आता है। उस वक्त मेरे अन्दर हँसी का फव्वारा छूटने वाला था लेकिन मैंने उसे दबाने की कोशिश की क्योंकि इतने शान्त माहौल में मेरी जोर से हंसी छूटती तो भाई लोग कहते, ये महाराज पागल हो गये। इतने में वो सितारा मेरी भृकुटि के पास आकर आतिशबाजी की तरह 'फट' की आवाज के साथ विशाल रंगीन रोशनी में बदल गया। फिर ध्यान आया, वो हंसी नहीं थी, वह तो आत्मा की खुशी थी, जो अन्दर से फूट रही थी, आनन्द का अनुभव था, आत्मा से परमात्मा का मिलन था। ❖

'पत्र' संपादक के नाम

ज्ञानामृत हाथ में पाकर आनन्द की अनुभूति होती है। इसमें छपे भाई-बहनों के अनुभव सीधे दिल को स्पर्श करते हैं और स्वयं में परिवर्तन करने की बहुत बड़ी प्रेरणा बनते हैं। 'संजय की कलम से' कॉलम पढ़कर बहुत ही दिव्य अनुभूति होती है। हर भाई-बहन का अनुभव प्रेरणादायक होता है पर एक अनुभव रेखा अग्रवाल का पढ़ा था, जो बहुत ही प्रेरणादायक था। ज्ञानामृत में बहुत सारी सूचनाएँ पढ़ने को मिलती हैं। इससे मैं बाबा से अधिक जुड़ती चली जाती हूँ।

– ब्र.कु. शीला झा, पटना

ज्ञानामृत जीवन को बदलने वाली पत्रिका है। यह संजीवनी बन कर मृत भावों को जीवन देती है।

– शंकर मोरे, गुना (म.प्र.)

ज्ञानामृत के विषय में यह बताना थोड़ा मुश्किल है कि इसका कौन-सा हिस्सा सबसे अच्छा लगता है। इसका प्रत्येक लेख और कविता, कुछ न कुछ सिखाता है, जो जीवन के किसी भी मोड़ पर काम आ सकता है।

– दयाशंकर शर्मा, सादुलपुर (राजस्थान)

ज्ञानामृत में प्रकाशित भाई-बहनों के एक से बढ़कर एक दिव्य एवं चमत्कारिक अनुभव स्वत: ही इस समय परमात्मा के दिव्य अवतरण एवं उनकी प्रत्यक्षता की पुष्टि कर देते हैं। मेरी नजर में अब तक ज्ञानामृत के अलावा कोई पत्रिका नहीं जिसको एक बार पढ़ना शुरू कर अंत में ही दम लूँ। कई लेखों को वापस मुड़कर देखने के लिए मजबूर हो जाता हूँ। इनमें विशेषकर संपादकीय, ब्रह्माकुमारी उर्मिला बहन जी के सभी लेख, रमेश भाई एवं नरेश भाई के लेख शामिल हैं। सचित्र समाचार पेज भी अनूठा है। पूर्ण सेवाभाव व समर्पित भाव को प्रोत्साहित करने वाला है। ऐसी प्रेरणादायी और ज्ञानवर्धन पत्रिका की उत्तरोत्तर तरक्की एवं भविष्य में नियमित प्रकाशन के लिए सहृदय शुभकामना।

– धनेश्वर प्रसाद, सेन्ट्रल जेल, रायपुर (छ.ग.)

अक्टूबर, 2016 अंक में प्रकाशित सम्पादकीय 'राजयोग द्वारा मुक्ति की ओर' में आत्मा और शरीर का ऐसा विश्लेषण किया गया है जो अवर्णनीय है। शरीर मुक्ति चाहता है या चेतन आत्मा? आत्मा है कर्त्ता, ना कि शरीर, आत्मा है भारहीन – आत्मा और शरीर के विषय में ज्ञान की तली में पहुँच कर ये मोती लाये गए हैं। अनेक सम्पादकीय मेरी डायरी में लिखे हैं। इसलिए बरबस ये पंक्तियाँ मन से निकल रही हैं, 'पानी-पानी सब कहते हैं गंगा जल कुछ और ही है, लिखने को सब लिखते हैं, सम्पादकीय कुछ और ही है।'

– ब्र.कु.गजराज सिंह यादव, बदायूँ (उ.प्र.)

श्रद्धांजलि

प्यारे बापदादा की अति लाडली, अथक सेवाधारी, बिहार के अनेक सेवाकेन्द्रों की स्थापना के निमित्त तथा अनेक कुमार-कुमारियों को समर्पित कराने वाली, बिहार के छपरा सेवाकेन्द्र की निमित्त संचालिका सीता बहन (सीता माता) सन् 1971 में ज्ञान में आई और सन् 1977 से स्थापित छपरा सेवाकेन्द्र को समर्पित बहन के रूप में संभाला। आपने अपने अनुभवी जीवन द्वारा सभी भाई-बहनों की ज्ञान-योग से बहुत अच्छी पालना की। आपने 9 दिसम्बर, 2016 को दोपहर 2.25 बजे अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। ऐसी महान त्यागी, तपस्वी आत्मा को पूरा दैवी परिवार अपनी स्नेह श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

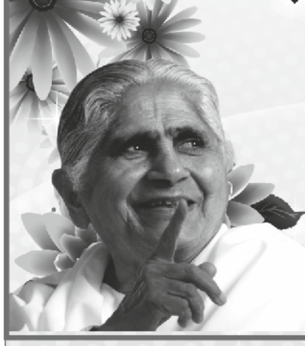

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्न- आपकी दृष्टि में समझदार कौन है?

उत्तर- मैं आपको अनुभव बताती हूँ कि अन्तर्मुखता और बाहरमुखता का कॉन्ट्रास्ट बहुत बड़ा है, उसको अच्छी तरह से देखो। बाहरमुखता में जंगल में चले जाते हैं। अन्तर्मुखता में फूलों के बगीचे में आ जाते हैं। अन्तर्मुखी सदा सुखी। मैं भी सुखी, आप भी सुखी। बाहर के आँख, कान, मुख कभी चंचलता भी करते हैं, ऑर्डर में नहीं रहते हैं लेकिन अन्दर भी आँखें हैं, मुख है, कान हैं। अन्दर की आवाज़ कहीं भी, किसको भी अनुभव होती है। जैसे शुरू में कइयों को घर बैठे अनुभव होता था कि कोई बुला रहा है, यहाँ जाओ। तो समझदार वो जो अन्दर की आवाज सुने, समझे, समय की कदर करे। यह समय पुरुषोत्तम संगमयुग का है, उत्तम पुरुष बनने का है।

प्रश्न- हम सबके प्रति आपकी भावना क्या है?

उत्तर- बाप, टीचर, सतगुरु – बाबा को तीनों रूपों में देखो, इमर्ज करो। अभी-अभी बाबा बाप है, अभी-अभी टीचर है। निमित्त भाव सीखना हो तो बाबा को देखो। एक बार पहाड़ी पर बाबा ले गये थे, शाम के समय। हम आजू-बाजू में बैठे थे। इतनी शान्ति!... जैसे सन्नाटा!... फिर बाबा ने पूछा, कहाँ थे? मैंने कहा, बाबा के साथ थी। बाबा ने फिर पूछा, कहाँ थी? उस समय शान्ति में इतनी शक्ति थी, जो कोई की आवाज़ नहीं निकल रही थी। फिर बाबा ने खुद ही बोला, ब्रह्माण्ड में थी। ब्रह्माण्ड कहाँ है? जहाँ आत्मायें अण्डे मिसल रहती हैं। मैं आप लोगों को टाइम टू टाइम बाबा के साथ के अनुभव सुनाती हूँ। जी चाहता है कि आपसे कुछ मिस न हो। मेरी भावना होती है, सभी जम्प लगाकर आगे से आगे बढ़ते लास्ट सो फर्स्ट में आवें।

प्रश्न- समयानुसार हमारी आन्तरिक अवस्था कैसी हो, उसके लिए क्या पुरुषार्थ है?

उत्तर- मेरे को अभी और कोई फिकर नहीं है, बाबा ने जो दिया है वो रिटर्न देना है। गीता के आखिरी अक्षर हैं, 'नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा'..ऐसी स्थिति अब हमारी हो। मैं अपने से पूछती हूँ कि मेरा किसी में मोह है? आप में से किसी का मेरे में मोह है? प्यार है लेकिन मोह नहीं है। मोहजीत माना ही कर्मातीत, विकर्माजीत, यही अन्दर में तात है। बाबा आपकी कमाल है! मैं शुरू से ही देखती हूँ, बाबा ने भण्डारा शुरू किया। न बहू का ख्याल किया, न बेटी का ख्याल किया, सब समर्पित कर दिया। बाबा को दो पोत्रे भी थे, उनसे प्यार भी बहुत था लेकिन सेकेण्ड में सबसे नष्टोमोहा बन गया। भागीदार को कहा, जितना देना हो दे दो बाकी तुम सम्भालो। सब यज्ञ में डाल दिया, एक कौड़ी भी घर में नहीं रखी। तो हरेक समझे, न मेरा कोई है, न मैं किसका हूँ, ऐसे अन्दर से अपने आपको फ्री रखो।

प्रश्न- दादी जी, बाबा के साथ आपका बहुत अच्छा सम्बन्ध है, तो कभी बाबा आपके कानों में कुछ सिक्रेट (रहस्य) सुनाते हैं क्या?

उत्तर- बाबा मुझे ऐसा कुछ नहीं कहते हैं, सिर्फ कहते हैं, मेरे को देखते चलती चलो। बाबा ने मेरे लिए सब रास्ते क्लीयर रखे हैं, कैसे चल? कहाँ चल? मेरे साथ चल। मुरली ध्यान से पढ़ी-सुनी तो सारा दिन वो स्मृति में रहने से हमारी वृत्ति और

दृष्टि भी वैसी हो जाती है। स्मृति अन्दर है, स्मृति माना बाबा की बातें ही याद हैं और कुछ याद नहीं है, तो वृत्ति और दृष्टि भी भाई-भाई या भाई-बहन की हो जायेगी, इससे सबकी चढ़ती कला और सबका भला हो सकता है। हमारी चढ़ती कला, आप सबका भला। मुझे तो आजकल सब अच्छे दिखाई पड़ते हैं। बाबा की रोज़ की मुरली हमारे दिल को साफ करती है, मन को शान्त करती है। बुद्धि को शुद्ध बनाती है और संस्कार मिलनसार बन जाते हैं। सूक्ष्म मिलनसार होने से एक-दो को सम्मान देना, स्वमान में रहना सहज हो जाता है। इसमें कोई खर्चा, कोई मेहनत नहीं। अपमान कोई मेरा करे भी पर मैं अपमान को फील नहीं करेंगी। अगर किसी का अन्दर साफ न हो तो मैं राय देती हूँ, मन को शान्त कर एक बाबा को याद करो तो शक्ति आ जाती है।

मैंने धर्मराज बाबा के साथ भी अच्छी तरह से सम्बन्ध रखा हुआ है। बाबा को कहती हूँ, बाबा, आपके बच्चे हैं, आप इनको धर्मराज के रूप का थोड़ा इशारा दे दो, तो कभी भी धर्मराज इनको आँख नहीं दिखायेगा। एक ही बार बाबा ने मुझे कहा था, कभी किसी से दु:ख लेती हो या किसी को दु:ख देती हो? अगर दु:ख देती-लेती नहीं हो तो चार्ट ठीक है। अब एक ही काम है 'दुआयें देना, दुआयें लेना।' कोई दुआ मांगे नहीं, पर ऑटोमेटिक सबके लिए दुआ यानी अच्छी-अच्छी भावना पहुँचती रहे। ज्ञान के मनन, चिंतन, मंथन से गहराई में जाते हैं, तो उससे भी हमारे में पावर आ जाती है। कभी यह नहीं समझो कि यह ऐसा है, यह ऐसा है। पाँच अंगुली बराबर नहीं हैं। बाबा को क्या चाहिए? संकल्पों में हलचल न हो। कभी भी अपने में उमंग-उत्साह कम न हो। हिम्मते बच्चे मददे बाप, सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। जब साहेब राज़ी है तो क्या करेगा काज़ी। तो साहेब को राज़ी रखने का पुरुषार्थ करना अच्छा है।

धर्मपितायें बाबा के सामने जरूर आने वाले हैं। आये भी हैं, आने वाले भी हैं क्योंकि यहाँ से, बाबा से शक्ति लेंगे। फिर जब समय आयेगा, धर्म स्थापन करने का, तो आ जायेंगे, अपना काम करना शुरू करेंगे। धर्मपिता भी परमपिता के घर में आ करके बाबा के थोड़े भी वचन सुनेंगे, बाबा प्यारा लगेगा तभी तो अपने धर्म में निमित्त बनते हैं। बाबा से एक बार पूछा था, जो पूर्वज आत्मायें हैं उनमें से किसी के लिए भी बताओ कि वे कहाँ हैं? मम्मा कहाँ है? तो कहा, नहीं बताऊंगा। बाबा ने कहा, मम्मा को ढूँढ़के उनके पास जाके बैठे रहेंगे क्या? हमने समझा था कि बाबा कोई-कोई का नाम बतायेगा पर आज दिन तक ऐसे चिंतन में जाने नहीं देता है इसलिए हरेक अपना भाग्य बनाये। ऐसी आत्मा देह सहित देह के सब सम्बन्धों से न्यारी, प्रभु की प्यारी है इसलिए किसी के लिए, कोई फिकर नहीं है। परमपिता के द्वारा जो स्वर्ग स्थापन हो रहा है उसमें अगर राजा नहीं भी बन पायें पर राजाई कुल में तो आ जायें। प्रजा में नहीं आना। मुझे एक ही संकल्प है, मेरे को देख बाबा दिखाई पड़े। अभी संकल्प, समय, श्वास को बाप समान बनाने में सफल करना है। हर सेकण्ड पर अटेन्शन रखो, हर पेनी पर अटेन्शन रख एकानामी करना है और एकनामी बनना है। मैं आप सबसे निवेदन करती हूँ, अपना समय कभी भी वेस्ट नहीं करना, संकल्प वेस्ट नहीं चलाना। अन्दर याद का बल और टाइमटेबल ऐसा अच्छा बनाओ जिससे चारों सब्जेक्ट्स में फुल मार्क्स मिलें। औरों को सन्तुष्ट करना है, खुद सन्तुष्ट रहना है, भले मेरे पास कुछ भी नहीं है परन्तु मीठे बोल तो हैं, ऐसी मधुरता-नम्रता-सत्यता हो। किसी ने कहा, मेरे में नम्रता की कमी है लेकिन नम्रता की कमी होने से फिर मधुरता भी नहीं होगी।

प्रश्न- सूर्यवंश में जाने वालों की निशानी क्या होगी?

उत्तर- बाबा की मुरली सुनते-सुनते कहीं बुद्धि बाहर नहीं जाती। बाबा का एक-एक महावाक्य इतना मधुर है जो दिल को लग जाता है क्योंकि बाबा ज्ञान सूर्य है, सूर्य की रोशनी सारे विश्व में फैलती है। यह वन्डर है, चन्द्रमा की रोशनी कभी फुल, कभी लकीर जितनी होती है। तो सूर्यवंशी में जाने वाले सदा सूर्य के समान चमकते हैं। सूर्य की सकाश जिस तरह काम करती है वैसे ही ज्ञान सूर्य प्रगटा अज्ञान अन्धेर विनाश। अज्ञान है बॉडी-कॉन्सेस, ज्ञान है सोल-कॉन्सेस। अभी हर एक की स्थिति ऐसी हो जो एक-दो को देख सुख भासे। ❖

यू-टर्न

ब्रह्माकुमार नवनाथ कोलापकर, पुणे

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आने से पहले मेरी यही धारणा थी कि जन्म हुआ है इसलिए जी रहे हैं, जीवन का कोई उद्देश्य नहीं है।

सन् 2005 में विठ्ठल भाई कर्चे नामक व्यक्ति ने मुझे इस विश्व विद्यालय के बारे में बताया, उसी आधार से मैं माउंट आबू पहुँचा। यहाँ पहुँचते ही प्रतीत हुआ कि मैं एक अनोखे विश्व में आ गया हूँ। कलियुगी दुनिया से अलग दुनिया, मायावी लोगों से अलग प्रकार के लोगों की दुनिया भी होती है, इस बात का मुझे आश्चर्य हुआ। महसूस हुआ कि धरती के स्वर्ग पर पधारा हूँ। विकारों से भरा हुआ मायावी विश्व अलग है और यह अलग है, ऐसी अनुभूति आबू धरती पर कदम रखते ही हो गई।

मन में उठे प्रश्न

यहाँ के भाई-बहनों की समर्पण भावना को देखकर मन अचम्भित हुआ। कुछ भी इच्छा न रखते हुए, नि:स्वार्थ वृत्ति से ये लोग कार्य कर रहे हैं, कैसे रहते हैं ये लोग, अपने भविष्य का, स्वहित का अंशमात्र भी विचार इनके मन में आता नहीं है, किसके लिये जी रहे हैं, इनके जीवन का लक्ष्य क्या है? ये प्रश्न मन में उठे। मैंने अन्य धार्मिक संस्थाओं में भी लोग देखे हैं लेकिन वो पैसे के लिए काम करते हैं। यहाँ किसी की भी तनख्वाह नहीं है, फिर भी ये लोग दिल से, खुद का काम समझ कर रहे हैं, यह असंभव इन्होंने सम्भव करके दिखाया है।

प्रश्नों के उत्तर मिल गए

जब मैं सभागार में पहुँचा तो दादी जी के महावाक्य मेरे कानों में गूँजने लगे और मेरे प्रश्नों के जवाब मिल गये। दादी जी कह रही थी, ''भ्रष्ट आचरण किसलिए? आपको बचपन में तो माँ-बाप ने ऐसा सिखाया नहीं था। स्कूल में जाने के बाद भी किसी टीचर ने ऐसा नहीं सिखाया होगा। फिर भी गलत काम क्यों? गलत आचरण की कोई प्रशंसा करता है क्या? अगर ऐसा लगता है कि हम ये अपने परिवार के लिए कर रहे हैं तो परिवार के किसी भी सदस्य से पूछिए, वह आपके गलत कर्म में सहभागी है क्या? जवाब क्या आयेगा? नहीं ही आयेगा। तो फिर किसलिए कर रहे हैं आप ये सब? आप जन्म से ऐसे नहीं थे, फिर अब ये गलत कर्म क्यों कर रहे हो? छोड़ दो ये सब, आज से, नहीं, अभी से।''

ईश्वरीय शक्ति का एहसास

अपने प्रश्नों के उत्तर पाकर मेरे जीवन की गाड़ी ने यू-टर्न ले लिया। जिस राह पर जा रहा था उस राह से पीछे मुड़ गया। मुझे परमपिता की उस शक्ति का एहसास हुआ जो इस विश्व विद्यालय के लोगों को मिल रही है। किसी इन्सान द्वारा यह काम हो नहीं सकता, यह महसूस हुआ। दूसरे लोगों को छोड़िये, अपने बच्चों को हम चाहकर भी अपने जैसा बना नहीं सकते। विश्व का परिवर्तन तो अपने बस की बात ही नहीं लेकिन इस विश्व विद्यालय के माध्यम से तो लाखों लोगों का परिवर्तन हो रहा है। अनेक लोग सन्मार्ग पर चल रहे हैं। इसके पीछे उस ईश्वर की ही शक्ति है।

बदल गया नजरिया

दादी जी ने आगे कहा, ''अपने बुरे कर्म हम दूसरों से छिपा सकते हैं लेकिन परमात्मा से नहीं। हमें ऐसा लगता है कि कोई देख नहीं रहा है लेकिन वह सदा हमें देख रहा होता है। जब परमात्मा सदा देख रहा है तो हम बुरे कर्म करें ही क्यों?'' यह सुनकर मेरे जीवन ने अलग मोड़ ले लिया। जीवन का अंतिम लक्ष्य क्या है, यह समझ में आ गया। हमें देवी-देवता बनना है तो हमारा व्यवहार भी उनके जैसा ही होना चाहिए। तब से मैं बहुत ही हल्का हो गया। जीवन को देखने का नजरिया बदल गया, कोई दुर्घटना घटती है तो भी कुछ खास नहीं लगती। शिव बाबा कहते हैं, ''जो कुछ हो रहा है या होने वाला है, वह सब अच्छा है और नया कुछ नहीं हो रहा है। ऐसी घटनायें कल्प पहले भी हुई थीं, अब सिर्फ रिपीट हो रही हैं।'' बाबा की इस शिक्षा से किसी भी घटना को देखने में साक्षी-भाव आ गया। बेफिक्र बादशाह बन गया। जीवन में नयी ऊर्जा आ गई। 'बाबा मेरे साथ है'

यह एहसास होने लगा। उपराम अवस्था होने लगी। पहले अगर कोई बुरा-भला बोलता था तो बहुत क्रोध आता था और बदला लेने की भावना मन में आती थी। अब किनारा कर लेता हूँ। बात को बदल देता हूँ, बदला लेने की भावना अब नहीं रही। इससे सामने वाला भी भूल जाता है। सबके प्रति शुभभावना, सर्व का भला हो, ऐसी भावना उत्पन्न होने लगी। पहले पड़ोसी ने कुछ नयी चीज घर में लायी या उसे ज्यादा फायदा मिल गया तो मन में ईर्ष्या पैदा होती थी, अब ये भावना नहीं रही। पड़ोसियों के प्रति भी शुभभावना निर्माण हो गई है।

ज्यादा चिंता नहीं होती

पहले मुझे अपनी चीज़ों को बहुत संभालकर रखने की आदत थी। अगर कोई छोटी-सी भी चीज गुम हो जाती तो चिंता लग जाती थी, जैसे पाँच रुपये का पेन भी गुम हो गया तो मैं परेशान हो जाता था। चीजों में 'मेरा-पन' अटका रहता था। अब कोई चीज गुम हो जाती है तो भी कुछ ज्यादा चिन्ता नहीं होती क्योंकि 'वैसी ही अनेक चीजें मिल सकती हैं' तो दुख क्यों करें? शिव बाबा कहते हैं, ''चिंता छोड़ो और चिंतन करो।'' मैं अब बाबा की याद में रहने लगा हूँ। जितनी याद ज्यादा होती है उतना मैं उमंग-उत्साह में रहता हूँ।

एक बाबा दूसरा न कोई

किसी को एक वातावरण अच्छा लगता है, किसी को दूसरा वातावरण अच्छा लगता है लेकिन मेरा वातावरण कैसा होना चाहिए, इसका निर्णय मैंने कर लिया है। 'एक बाबा दूसरा न कोई' मुझे यही वातावरण अच्छा लगता है। इसी में आनंद मिलता है। ऐसा वातावरण जहाँ भी हो वहाँ मैं जाता हूँ। इस वातावरण में व्यर्थ विचार ठहरते ही नहीं, भाग जाते हैं। अब मुझे जीवन का लक्ष्य मिल गया है। इसी कारण मुझे अपने लक्षणों की चिंता सदा लगी रहती है। इससे पहले जो कुछ भी हुआ सो हुआ। उसे फिर-फिर याद करने से क्या फायदा? अब हर पल सावधानी बरत रहा हूँ। बाबा कहते हैं, ''बीती को बिंदी लगाओ'', वही मैं कर रहा हूँ। मंज़िल बहुत ऊँची है तो फिर उसी तरह से कदम बढ़ाने हैं। अब मेरे खाते में एक भी विकर्म का जुड़ाव न हो, अच्छे कर्म बढ़ने चाहिएँ, इसकी सावधानी बरत रहा हूँ। अब छाछ भी फूँककर पी रहा हूँ, नहीं तो लक्ष्य तक कैसे पहुँचेंगे?

सारी नदियाँ एक सागर में ही मिल जाती हैं। फिर नदियों के पास हम क्यों जायें? हम सीधे उस ज्ञानसागर के पास जायेंगे। सबके जीवन का अंतिम लक्ष्य यही रहता है। फर्क इतना ही है कि किसी की समझ में जल्दी आता है तो किसी को समझ बाद में मिलती है। अगर घर जाने के लिये सीधा रास्ता है तो टेढ़े रास्ते से क्यों जायें?

प्रशिक्षण अवधि (संगमयुग)

नये घर में जाने से पहले सब पैकिंग करनी चाहिए। मेरा पसंद की जगह तबादला हो गया है। अब पुराना स्थान मन से छोड़ दिया है। अब मैं सदा अपने नये स्थान के सपनों में ही खोया रहता हूँ। एक ही जगह पर बहुत समय तक काम करते रहें तो बोर हो जाते हैं। नये स्थान की जिम्मेवारी बहुत बड़ी है। उसे अच्छी तरह से निभा सकूँ इसलिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में मेरी प्रशिक्षण अवधि (संगमयुग) चल रही है। प्रशिक्षण पूरा होते ही मैं नये स्थान की जिम्मेवारी उठाने लायक बन जाऊँगा।

विश्व विद्यालय ने दी है प्रतिष्ठा

इस जीवन ने मुझे बहुत कुछ दिया। मैंने उस परमपिता परमात्मा को जान लिया और पाना था सो पा लिया, अब बाकी कुछ नहीं रहा है। जीवन पूरी तरह से जी लिया है। लगभग सब पैकिंग हो गई है। अब एवररेडी होने का प्रयास कर रहा हूँ। ऑर्डर कभी भी आ सकता है। नये घर पहुँचने की जल्दी होने लगी है। कहावत है, जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि। मैं जब से इस विश्व विद्यालय में आया हूँ, लोग मुझे अलग-सी दृष्टि से देखते हैं। इसने मुझे प्रतिष्ठा दी है। इसकी वजह से ही यह परिवर्तन हो सका है। इस विश्व विद्यालय के माध्यम से इस विश्व का भी परिवर्तन जल्द ही होना है, यह निश्चित है।

बदलेंगे तस्वीर विश्व की परमपिता शिव की संतान
घर-घर में खुशहाली होगी मानव होगा देवसमान।

किस्मत अर्थात् किस की मत

ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

सब्जी बेचने वाले एक व्यक्ति ने खुशी-खुशी दुकान में बोर्ड लगाया था, 'यहाँ ताजी सब्जी मिलती है।' उसी सड़क पर एक पत्रकारिता महाविद्यालय था। पत्रकारिता के छात्रों को सिखाया जाता है कि कम से कम शब्दों में ज्यादा से ज्यादा सूचना दी जाए। उधर से गुजर रहे पत्रकारिता के एक छात्र की नजर उस बोर्ड पर पड़ी। वह कहने लगा, भाई साहब, 'यहाँ ताजी सब्जी मिलती है' का क्या मतलब है? यहाँ नहीं मिलेगी तो कहाँ मिलेगी? 'यहाँ' शब्द गैरजरूरी है, इसे हटाइए। बेचारे दुकानदार ने 'यहाँ' पर सफेदी पुतवा दी।

अगले दिन एक और छात्र आ धमका। कहने लगा, 'ताजी' लिखने की क्या जरूरत है? कहीं बासी सब्जी भी मिलती है क्या? दुकानदार ने 'ताजी' शब्द भी मिटवा दिया। कुछ घंटों के बाद पत्रकारिता के एक और प्रतिभाशाली छात्र ने दुकानदार को झिड़का, सब्जी मिलती है का क्या मतलब है? है तो मिलेगी ही। 'मिलती' लिखने की कोई जरूरत नहीं है। दुकानदार ने उसका सुझाव भी सिर-आँखों पर लिया और 'मिलती' शब्द भी मिटवा दिया।

अब बोर्ड में यही लिखा रह गया, 'सब्जी है'। यह सिलसिला यहीं नहीं थमा। इस बार एक छात्रा पहुँची। उसने अपना अर्जित ज्ञान दुकानदार को दिया, जो चीज नहीं होती, उसे भी लिखा जाता है क्या? जाहिर है, सब्जी उपलब्ध है। बोर्ड पर 'है' की आवश्यकता नहीं है। दुकानदार ने 'है' भी मिटवा दिया। अब बोर्ड पर सिर्फ 'सब्जी' बचा रह गया।

अगले दिन एक और जानकार की बारी थी। वह कहने लगा, 'दादा, आपकी दुकान से सब्जियाँ हर चलते व्यक्ति को दूर से ही नजर आती हैं और हर कोई जानता है कि आपकी दुकान में सब्जियाँ ही रखी हैं, ऐसे में सब्जी लिख कर बोर्ड टांगने का क्या अर्थ?' दुकानदार ने कहा, बात तो आपकी भी सही है।

इस तरह पूरा बोर्ड खाली हो गया। कुछ देर बाद एक और भावी पत्रकार वहाँ पहुँच गए। उन्होंने भी अपनी राय दी, भाई साहब, यह विज्ञापन का जमाना है, इसके बगैर ग्राहक नहीं आते। आपने बेकार ही खाली बोर्ड टांग रखा है। इस पर लिखवा क्यों नहीं देते कि 'यहाँ ताजी सब्जी मिलती है।'

देखा आपने, दुनिया में मतें तो अनेक प्रकार की हैं। कौन, किस मत पर चलता है, यह उसका अपना निर्णय है। विकारी मत पर चलने वाले सदा दुखी रहते हैं। यदि मनुष्य परमत अनुसार चलते रहें, अपने फैसले बदलते रहें तो अन्त में मूर्ख बन कर रह जायेंगे।

लोगों को कहते सुना है, वे बड़ी किस्मत वाले हैं, उनकी किस्मत चमक गई। अब किस्मत कैसे चमकी?

किस्मत का अर्थ है किस की मत (किस + मत = किस्मत)? जिस मत पर चलकर किस्मत चमकती है, वह है श्रीमत अर्थात् परमात्म मत। यह परमात्म श्रीमत कोटों में कोई, कोई में भी कोई पदमापदम भाग्यशाली आत्माओं को वर्तमान कल्याणकारी संगमयुग पर ही मिलती है। संगमयुग पर ब्रह्मा की भी मत मिलती है। आसुरी मत से संसार नर्क बना है और श्रीमत से स्वर्ग की स्थापना होती है। सतयुग में तो सब श्री अर्थात् श्रेष्ठ हैं इसलिए उन्हों को किसी की मत की दरकार नहीं है।

श्रीमत पर चलने वाले, एक संकल्प भी मनमत वा परमत पर नहीं कर सकते। पुरुषार्थ की स्पीड यदि तेज नहीं होती तो ज़रूर कुछ न कुछ मनमत या परमत मिक्स है। अल्पज्ञ आत्मा के संस्कार अनुसार जो संकल्प उत्पन्न होते

हैं वे स्थिति को डगमग करते हैं, यही मनमत है। इसलिए सावधान रहो, एक कदम भी श्रीमत के बिना न हो तब पदमों की कमाई जमा कर पदमापदम भाग्यशाली बन सकेंगे।

शिवभगवानुवाच, ईश्वरीय मत पर चलने वाले सर्व खजानों से मालामाल हो जाते हैं। शिव की मत ही श्रीमत है जिस पर चलने से आत्मा पवित्र बन कर वापिस अपने घर परमधाम जाती है और नई दुनिया में ऊँच पद पाती है। ईश्वरीय मत पर चलने के लिए पहले-पहले पढ़ाने वाले सुप्रीम टीचर शिव परमात्मा पर पूरा निश्चय चाहिए।

अपने आप से पूछो – क्या इस विनाश काल में मेरी परमपिता परमात्मा शिव से सच्ची प्रीत है? और सब संग तोड़ एक संग प्रीत जोड़ी है? मनमत पर चलकर कोई विकर्म तो नहीं किए हैं? ❖

श्रद्धांजलि

हम सबकी अति स्नेही, साकार बापदादा, दीदी, दादी की पालनाप्राप्त, नम्रचित्त, निर्माणचित्त, सादगी, सरलता की मूरत, त्यागमूरत, रहमदिल, समस्तीपुर सेवाकेन्द्र प्रभारी आदरणीया अरुणा बहन जी पिछले 55 वर्षों से समर्पित होकर ईश्वरीय सेवायें दे रही थीं। आप सन् 1960 में ज्ञान में आई और सन् 1962 में समर्पित हुई।

आपने पटना, कोलकाता, विराटनगर (नेपाल), उदयपुर, जोधपुर, मधुबनी आदि अनेक स्थानों पर अपनी अमूल्य सेवायें दीं और समस्तीपुर सेवाकेन्द्र के स्थापना-काल से विगत 29 वर्षों से यहाँ की फुलवारी को सींचते हुए बिहार में अनेक सेवाकेन्द्रों की स्थापना के निमित्त बनीं। आपने अलौकिक पालना देकर अनेक बहनों को बाबा की सेवा के लिए योग्य बनाया। आप 19 जनवरी अमृतवेले 3.00 बजे बापदादा की गोद में समा गई। आप काफी समय से अस्वस्थ चल रही थी। आपको 19 जनवरी सद्गुरुवार को बिहार के अनेक सेवाकेन्द्रों से पधारे मुख्य भाई-बहनों सहित विशाल दैवी परिवार ने भावभीनी अन्तिम विदाई दी। ऐसी स्नेही, तपस्वी, अथक सेवाधारी महान आत्मा को सारा दैवी परिवार अपनी स्नेह श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

बापदादा की अति लाडली, स्नेही, तपस्वी, अथक सेवाधारी ब्रह्माकुमारी गंगादेवी शर्मा (गंगा माता) जो विगत 45 सालों से समर्पित होकर काठमाण्डू-नेपाल जोन के अन्तर्गत जनकपुर क्षेत्र की सब-जोन मुख्य संचालिका के रूप में सेवा दे रही थी। दिनांक 17 जनवरी सुबह करीब 10 बजे अपना पार्थिव शरीर छोड़ आप बापदादा की गोद में समा गई। आपका अन्तिम संस्कार धार्मिक स्थल पशुपति क्षेत्र आर्यघाट में हजारों दैवी भाई-बहनों तथा लौकिक मित्र-सम्बन्धियों की उपस्थिति में भावभीनी श्रद्धांजलि के साथ किया गया। ऐसी स्नेही, त्यागी, तपस्वी, अथक सेवाधारी महान आत्मा को सारा दैवी परिवार अपनी स्नेह श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

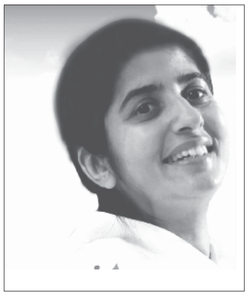

मन का स्वास्थ्य

ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन, गुरुग्राम (हरियाणा)

सारे दिन में हम सबका ध्यान रख लेते हैं जैसेकि ऑफिस का, घर का, परिवार का, यहाँ तक कि अपनी गाड़ी का भी। हम याद रखते हैं कि हर महीने इस तारीख पर इसको सर्विसिंग के लिए भेजना है।

सब चीज़ों का ध्यान रखते हैं,फिर क्यों हम अपने मन का ध्यान नहीं रख पाते हैं? ध्यान रखना हम सबको आता है। इसके लिए हमें कहीं, किसी के पास सीखने नहीं जाना है, न ही कोई किताब पढ़ने की आवश्यकता है। यह सिर्फ हमारी प्राथमिकता की सूची में नहीं है।

किसी से भी आप पूछो कि आप अपना ध्यान रखते हो? तो कहेंगे, हम शरीर का ध्यान रखते हैं, इसको साफ रखते हैं। वे केवल अपने शरीर का ध्यान रखने की बात ही करते हैं। पूछो, मन का ध्यान कौन रखेगा? तो जवाब मिलेगा कि ऊपर वाला ध्यान रखेगा। माना, मन का ध्यान रखने की जिम्मेवारी ऊपर वाले की है। परमात्मा की मदद की उम्मीद हम इसी में करते हैं कि वो हर परिस्थिति में मेरा ध्यान रखेगा, मेरी सोच की गुणवत्ता का ध्यान वही रखेगा। आज हम धार्मिक स्थलों पर किसलिए जाते हैं?

हम वहाँ सिर्फ इसलिए जाते हैं कि घंटे, दो घंटे अच्छी-अच्छी बातें सुनें और फिर कह देते हैं कि बहुत अच्छा, ठीक है, अब अगले शुक्रवार को मिलेंगे। फिर इस शुक्रवार से अगले शुक्रवार तक वही पहले वाली दिनचर्या, परेशानी, झंझट, संकट, सब कुछ। अगले शुक्रवार को गये, दो घंटे बैठे, क्यों? लक्ष्य फिर भी नहीं है कि हमें अपने मन का ध्यान रखना है। सब चीजों का ध्यान रखते हुए हमें अपनी प्राथमिकता की सूची में मन को सबसे पहले रखना होगा, तभी हम अपना ध्यान रख पायेंगे। क्योंकि सभी बातों का ध्यान रखने वाला यह मन ही है, न कि शरीर। अगर मन खुश है तो शरीर अगर थोड़ा बीमार भी होगा ना तो हम उसे चला लेंगे लेकिन सब कुछ ठीक होते भी अगर मन चिड़चिड़ा हो गया तो मैं कैसे खुश रह पाऊँगी। मेरे परिवार का ध्यान कौन रखता है? मैं रखती हूँ। मेरे घर का ध्यान कौन रखता है? मैं रखती हूँ। तो मेरा ध्यान कौन रखेगा? मैं ही रखूँगी ना।

जब हम अपने मन का ध्यान नहीं रख पाते हैं तो दूसरों का ध्यान हम कैसे रखेंगे! परिवार का ध्यान रखना हमारी जिम्मेवारी है। परिवार में भी हम सिर्फ सबके शरीर का ही ध्यान रख रहे हैं। बच्चों के लिए अच्छे स्कूल, अच्छी शिक्षा, अच्छे खिलौने, माना सब कुछ अच्छा देते हैं लेकिन बच्चों के भावनात्मक स्वास्थ्य का ध्यान कौन रख रहा है? कोई नहीं। जहाँ ध्यान रखने की बात आती है तो हम बिना अपना ध्यान रखे, दूसरों का ध्यान नहीं रख सकते। मान लीजिए, आज मेरे पास दो चपाती हैं, मैं बिना खाये आपको खिला सकती हूँ। मैं अपने लिये नये कपड़े नहीं लूँगी लेकिन अपने बच्चों के लिए नये कपड़े ले सकती हूँ लेकिन अफसोस की बात है कि मैं बिना खुश रहे औरों को खुशी नहीं दे सकती हूँ। यह ऐसी चीज है जो बिना पास रखे, किसी दूसरे को दी नहीं जा सकती है। इसीलिए मुझे पहले अपना ध्यान रखना होगा। तब स्वत: ही मैं औरों का ध्यान रख सकती हूँ। जब मैं भावनात्मक रूप से मजबूत रहूँगी तो मेरे बच्चे स्वत: ही भावनात्मक रूप से मजबूत रहेंगे। यदि मैं ही सारा दिन अशांत रहूँ, चिल्लाती रहूँ, गुस्सा करती रहूँ, जब मेरी ही आंतरिक क्षमता कम है तो बच्चों की स्वत: ही कम हो जायेगी। महत्वपूर्ण बात, जो याद रखने वाली है, यह है कि अगर मैंने अपने मन का ध्यान नहीं रखा, तो मैं किसी का भी ध्यान नहीं रख सकती हूँ, यहाँ तक कि किसी की भावनाओं का, किसी की अपेक्षाओं का भी ध्यान नहीं रख पाऊँगी। ❖

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष ...

जूती या टोपी

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

आज हम नारा दे रहे हैं कि 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' पर अन्तरात्मा को झिंझोड़ने वाला प्रश्न यह है कि जो बेटियाँ बची हुई हैं और जो पढ़ी हुई हैं, क्या वे खुश हैं? यदि उत्तर यह है कि खुश नहीं हैं तो फिर पहले इन बची हुई और पढ़ी हुई बेटियों को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने की मुहिम चलाएँ। और यदि उत्तर यह है कि खुश हैं, फिर तो इस नारे की जरूरत ही नहीं है।

किस हालत में है आधी आबादी?

जब-जब नारी सशक्तिकरण की बात चलती है हम मंचों पर, होर्डिंग्स पर गिनी-चुनी सशक्त नारियों के नाम बखान कर खुश हो लेते हैं कि मदर टेरेसा, इन्दिरा गांधी, कल्पना चावला, झांसी की रानी, किरण बेदी, पी.टी.उषा, सानिया मिर्जा.....आदि-आदि सशक्त महिलाओं ने इतिहास रचकर, नारी जाति का नाम रोशन कर दिया है। सवाल यह है कि इनके अलावा भारत की आधी आबादी (लगभग 65 करोड़ महिला वर्ग) किस हालत में है, किस परिस्थिति में जी रही है?

उत्तर भारत के गाँवों में और शहरों में भी महिला सशक्तिकरण अभियान के दौरान कई ऐसी बातें सुनने को मिलीं जिन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि नवजागरण रूपी सर्प का केवल मुँह ही 21वीं शताब्दी तक आया है, उसकी पूंछ अभी भी 17वीं शताब्दी में है। आबादी के तेजी से शहरीकरण के बावजूद उनकी सोच का शहरीकरण नहीं हो पाया है और नारियाँ रूढ़ीवादी सोच में स्वयं भी बंधी हुई हैं और दूसरों द्वारा भी बांधी गई हैं। आइये देखें, नारी पर लादी गई अपमानजनक बातों रूपी बेड़ियों की एक झलक जिन्हें मिटाए बिना, हटाए बिना उसकी सम्मानजनक तस्वीर बन ही नहीं सकती।

पति को खा गई

आज भी देश और समाज के कुछ हिस्से ऐसे हैं जहाँ यदि नवविवाहित स्त्री का पति शरीर छोड़ दे तो उसे दबे-छिपे या सीधे-सीधे भी यह सुनना पड़ता है कि यह तो ऐसी डायन है जो पति को ही खा गई। यदि नवविवाहित पुरुष की स्त्री चली जाए तो उसे कोई नहीं कहता कि स्त्री को खा गया। तो क्या नारी, नरभक्षिणी है? क्या उसे पति को खाने का शौक है? एक तो वह विधवा होने के दुख से दुखी है और ऊपर से उसके प्रति सहानुभूति दिखाने की बजाय जले पर नमक छिड़का जाता है, हम ऐसे निष्ठुर और पत्थर दिल हैं! लम्बी आयु सौभाग्य है और यह सभी को अपने-अपने कर्मों से मिलती है। अगर किसी की आयु कम है तो इसमें किसी अन्य का क्या दोष है? हम ऐसे सदमे की शिकार महिला को स्नेह दें, सम्मान दें, उसकी शक्ति किसी सार्थक कार्य में नियोजित करें, यही हमारा कर्तव्य है। लांछनों से उसे छलनी न करें।

पाँव की जूती

आधुनिकता के रंग में तेजी से रंगते समाज में आज भी कई लोग नारी को पाँव की जूती का दर्जा देते हैं। ऐसे लोगों से कोई पूछे कि यह अपमान किसका है? इस अर्थ में तो ऐसा कहने वालों के बच्चे जूती के बच्चे हुए और वे स्वयं भी क्योंकि माँ के लिए कहे गए अपमानजनक शब्द सीधे-

सीधे उसकी सन्तान के माथे का कलंक बन जाते हैं। यदि हम नारी को सिर की टोपी कहते तो इससे हमारा ही गौरव बढ़ता, हम टोपी के बच्चे होते। अगर नारी जूती है तो पुरुष क्या हुआ? हम ऐसे कुशब्द उसके लिए प्रयोग न करें जो हमें जन्म देने वाली, संस्कार देने वाली, संरक्षण देने वाली और अपने लिए न जीकर हमारे लिए जीने वाली है।

नरक का द्वार

शंकराचार्य जी बहुत बड़े विद्वान हुए हैं। उनके त्याग और तप का बखान करना इस साधारण कलम का कार्य नहीं। उन्होंने संन्यास धर्म की स्थापना की। अपनी माँ को उन्होंने वचन दिया कि वे उसके अन्तिम संस्कार पर हाज़िर हो जाएंगे और वे हुए भी, अपना वचन निभाया भी। माँ को इतना सम्मान देने वाले उन्हीं शंकराचार्य ने लिख दिया, नारी नरक का द्वार है। वास्तव में तो काम विकार नरक का द्वार है। यह जिसमें भी प्रवेश होता है, चाहे नर, चाहे नारी – दोनों ही नारकीय हो जाते हैं। इससे बचने के लिए किसी वर्ग से दूर भागने या जंगल में जाने की जरूरत नहीं बल्कि देह के भान से परे रहने की जरूरत है। देह तो मुखौटा है। मुखौटा का अर्थ है खोटा मुँह। कोई भालू या शेर का मुखौटा लगाकर खेल दिखाता है तो सचमुच शेर या भालू नहीं हो जाता, इसी प्रकार नर शरीर या नारी शरीर तो मुखौटा है, वास्तविक मुख (पहचान) तो यह है कि हम आत्मा हैं, ज्योतिबिन्दु रूप हैं, प्रकृति के शरीर को धारण कर सृष्टि मंच पर पार्ट बजा रही हैं। हमारा वास्तविक घर ब्रह्मलोक है।

ताड़न की अधिकारी

महाकवि तुलसीदास की जीवन कहानी हम सभी ने सुनी है। वे नदी में तैरते एक मुर्दे पर चढ़कर अपनी पत्नी से मिलने उसके पीहर घर पहुँच गए थे। तब पत्नी रत्नावली ने उन्हें फटकारा था कि जितना प्रेम मेरे इस हाड-माँस के पुतले से है, इतनी प्रीत राम से होती तो कल्याण हो जाता। तुलसीदास जी को यह बात लग गई। वे राम की प्रीत में खो गए और ' रामचरित मानस ' की रचना कर डाली। इस उत्कृष्ट ग्रन्थ में उन्होंने न्याय, नीति, धर्म की अनेक बातें लिखीं पर यह भी लिख डाला कि 'ढोल गँवार शूद्र पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी।' विचारणीय तथ्य है कि उनको राम की प्रीत का मार्ग दिखाने वाली एक नारी ही तो थी। उन्हें तो उसका कृतज्ञ होना चाहिए था। 'मानस' के प्रारम्भ में इसकी चर्चा करनी चाहिए थी कि मुझे महाकवि बनाने वाली एक नारी है, मैं उसका कृतज्ञ हूँ। उसकी भेंट में वे तो नारी को ताड़न की अधिकारी बना गए, तो क्या वे रत्नावली से चिढ़े हुए थे? इस लिखत से समाज की अतुलनीय हानि हुई। पुरुषों को नारियों को पीटने का, अत्याचार करने का लाइसेंस मिल गया। समाज के लोगों ने तुलसीदास की अन्य शिक्षाओं को 'मानस' में पढ़ा या नहीं पर इस लाइन को तो अच्छे से रट लिया। अभियान के दौरान एक ऐसी महिला की व्यथा सामने आई जो उप-पुलिस अधीक्षक है, एक डॉक्टर से उसकी शादी हुई है और डॉक्टर पति से रोज पिटती है। इस हिंसा के पीछे कारण यह बताया गया कि पति उसके पद का दुरुपयोग करता है, लोगों से नाजायज कार्य करवा लेता है। जब वह विरोध करती है तो हिंसा पर उतारू हो जाता है। हमें यह भी बताया गया कि दोनों के रिश्ते तलाक के कगार पर पहुँच गए हैं। नारी पढ़ी-लिखी हो या अनपढ़, घरेलू हिंसा के कारण तन और मन से शक्तिहीन हो रही है। अत: आज 'बेटी बचाओ' से भी ज्यादा यह आवाज उठाने की जरूरत है 'बची हुई बेटियों को घरेलु हिंसा, सामाजिक हिंसा, शारीरिक प्रताड़ना से बचाओ।'

लिंग-भेद के आधार पर प्रतिबन्ध

अभियान के दौरान लुधियाना में एक गैर-सरकारी संस्थान के संचालक से मिलना हुआ। उन्होंने पंजाब के अनेक स्वतन्त्रता सेनानियों, जिन्हें अंग्रेज सरकार द्वारा फांसी पर चढ़ा दिया गया था, की तस्वीरें और मॉडल बनाकर एक कमरा उनको समर्पित किया हुआ है। वे हमें बताने लगे कि परतन्त्रता के दौरान भारतीयों को अंग्रेज लोग ब्लैक डॉग (काले कुत्ते) कहकर पुकारते थे और

होटलों, आरक्षित ट्रेनों, अच्छे बाजारों में उनका जाना प्रतिबन्धित था। हमने उनसे कहा, अंग्रजों ने, भारतीयों को अपमानित किया और भारत के ही लोग, भारत की ही माताओं-बहनों को अपमानित करते आ रहे हैं, अब भी कर रहे हैं। देश आजाद हो गया पर ये माताएँ-बहनें आजाद कब होंगी? हमने उन्हें बताया कि आज भी बहुत-से मन्दिर हैं जहाँ लिंग भेद के कारण नारियों का जाना वर्जित है। बहुत-से लोग आज भी इस पुरानी सोच के साथ जी रहे हैं कि नारी चिता के पास ना जाए, वेद या शास्त्र ना पढ़े, हनुमान जी और शिव जी के मन्दिर में ना जाए। बहुत-से महात्मा आज भी नारी का मुख नहीं देखना चाहते। क्या इन सब प्रतिबन्धों के लिए नारी दोषी है या हमारी विकृत सोच दोषी है?

माताएँ क्यों जिन्दा शहीद हो रही हैं?

उनके संस्थान में नि:शुल्क सिलाई सीखने वाली बहनों से जब पूछा गया कि घर में पक्षपात या हिंसा की शिकार कौन-कौन बहनें हैं, तो कुछ हाथ खड़े हो गए। हमने कहा, शहीद तो गए, उनकी यादें प्रेरणा देती हैं, उन्होंने हिंसा सही आजादी जैसे महान उद्देश्य के लिए पर ये माताएँ-बहनें क्यों सहती हैं? ये क्यों जिन्दा शहीद हो रही हैं? आजाद देश की ये माताएँ-बहनें बिना किसी कारण के क्यों सताई जा रही हैं, हमें यह भी तो जानना चाहिए ना। वे दयालु अन्दर तक पसीज गए और हाथ खड़े करने वाली महिलाओं से व्यक्तिगत रूप से मिलने और स्थिति की पूरी तरह जाँच करने और समाधान करने का आश्वासन उन्होंने दृढ़ संकल्प के साथ दिया।

विकृत मानसिकता का जड़ से उन्मूलन करें

उपरोक्त विकृत बातें सर्वप्रचलित नहीं पर कुछ लोगों के मनों में घर किए हुए हैं, परन्तु बुराई चाहे बहुप्रचलित हो या अल्प प्रचलित, है तो बुराई ही। सरकार ने पोलियो को जड़ से समाप्त करने का अभियान चला रखा है, हर बच्चे को अनिवार्य रूप से पोलियो की खुराक पिलाई जाती है, महिलाओं के प्रति अपमानजनक शब्द प्रयोग करने की मानसिकता का भी जड़ से उन्मूलन होना चाहिए। यह मानसिक विकृति या विकृत सोच शारीरिक बीमारियों से कई गुणा अधिक घातक है। इसे मिटाए बिना 'बेटी बचाओ,बेटी पढ़ाओ' अभियान सफल कैसे होगा? बेटी ही तो बड़ी होकर एक नारी का रूप धारण करेगी और नारी बनने के बाद उसे भी यदि समाज में प्रचलित अपमान का जहर पीना पड़े तो उसके बचने और पढ़ने पर प्रश्नचिन्ह जरूर लगेगा। आइये, प्रण करें हम समस्त नारी जाति से सम्मानजनक व्यवहार करेंगे। ❖

नारी - स्वर्ग का द्वार

ब्रह्माकुमारी डॉ.शकुन्तला, किंग्जवे कैम्प, दिल्ली

जब भी दुख के बादल छाएँ, घेरे हों मन को शंकाएँ,
हिलती-डुलती नाव विषय के सागर में जब गोते खाएँ,

ऐसे में जो परमपिता के सत्यमार्ग का दरस दिखाए,
वो है नारी धरम की धरनी, जो शुचिता परचम फहराए।

धर्मग्लानि जब भी हो, जब मानव पथ-भ्रमित हो जाए,
ज्ञान की गंगा बनकर नारी, मरुथल को शीतल कर जाए।

अंगारों से जली धरा पर विकृतियाँ सिर लिए उठाएँ,
कोने-कोने से त्राहिमाम की भीषण अग्नि कहकहाए।

ऐसे विषम समय पर जब मन का शिशु न कोई ओना पाए,
कल्याणी वो, नवदुर्गा माँ बन अपना आँचल फैलाए।

करकमलों से सींचे कोंपल, ज्ञानकलश गगरी छलकाए,
कहीं पे शक्ति, कहीं पे माँ बन, सदाचार का पाठ पढ़ाए।

क्षमा, दान, धन, प्रेम की देवी बन, सबको सन्मार्ग दिखलाए,
क्षीण, मलिन, महामूर्च्छित को अमृत दे, सुरजीत बनाए।

नारी स्वर्ग का द्वार है, प्रेम-प्रसाद, सुखों की जननी है,
नूतन विधियाँ रच-रच पार कराती, वैतरणी है।

परमपिता के सत्य ज्ञान को जिसने जन-जन में फैलाया,
वो है नारी, द्वार स्वर्ग का जिसने सबको दिखलाया।

एकाग्रता

ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

'जागृत अवस्था में मन को किसी एक विचार पर टिका कर, संबंधित वस्तु, व्यक्ति, विषय या घटना के सूक्ष्म पहलुओं को बुद्धि के समक्ष उपलब्ध कराना एकाग्रता है। मन के संकल्प या विचार हर दिशा में अग्रसर होते हैं परन्तु मनन या विचार सागर मन्थन एक ही दिशा में अग्रसर होता है। उस एक दिशा में किसी एक बिन्दु पर ठहरना या बिन्दुवार आगे बढ़ना एकाग्रता है। अपने मन को किसी एक बिन्दु में टिकाने के लिए यह ज़रूरी है कि अपनी इच्छाओं व क्षुद्र व्याकुलताओं पर नियंत्रण रखा जाए। इच्छाओं को कम व शुद्ध किए बिना मनुष्य का मन एकाग्र नहीं हो सकता और एकाग्रता के बिना ईश्वरीय स्मृति में टिकना संभव नहीं है। ईश्वरीय स्मृति अर्थात् मन की ईश्वर के प्रति प्रेमभरी अनन्यचित्तता।

हमारी आंखों में एक बिन्दु होता है, जो यदि न हो तो सामने के दृश्य हमारे दृष्टि-पटल पर नहीं बन सकते। जिस प्रकार आंख का महत्व बिन्दु से है, उसी प्रकार आंख शब्द का महत्व भी बिन्दु से है जिसके गायब होते ही आख बचता है, जो कि अर्थहीन है। एक चित्रकार था। उसने एक खूबसूरत नारी का आदमकद चित्र बनाया जिसे वह एक प्रतियोगिता में भेजने वाला था। लाख कोशिश के बाद भी उसे यह समझ में नहीं आया कि यह चित्र बेजान क्यों जान पड़ता है। हार कर उसने अपने एक चिर-प्रतिद्वन्द्वी से मदद ली। उस ने सबसे बारीक ब्रश लिया और दोनों आंखों में एक-एक बिन्दु बना दिया, जो भूलवश नहीं बनाया गया था। इससे वह चित्र मानो सजीव हो उठा। हमारे जीवन में भी यदि एकाग्रता का बिन्दु कायम नहीं है तो जीवन मृतप्राय है। यह एकाग्रता का बिन्दु सहज रीति प्राप्त हो सकता है, यदि सजीव बिन्दु आत्मा का अनुभव हो जाए, जो कि भृकुटि में बैठ कर शरीर को सजीव रखती है। वर्तमान में स्वयं परमपिता परमात्मा शिव, गुह्य रीति से सर्वोच्च चित्रकार बन कर ज्ञान के बारीक ब्रश से मनुष्यों की भृकुटि के मध्य एक बिन्दु बना रहे हैं अर्थात् जो बिन्दु रूपी आत्मा अज्ञानता की परत में दबी पड़ी थी, उसे प्रत्यक्ष कर रहे हैं। ऐसी प्रत्यक्ष हुई आत्माएं ही फिर अपने परमपिता परमात्मा शिव को संसार के सामने प्रत्यक्ष कर रही हैं।

कोई भी नारी, चाहे वह शान्त हो या अशान्त, जब स्नान के बाद शृंगार करते हुए माथे पर बिन्दी लगाती है, तो उसकी एकाग्रता देखने लायक होती है। वह एकाग्र हो कर भृकुटि के बीचों-बीच बिन्दी लगाती है अन्यथा चेहरे की शोभा बिगड़ जाती है। परन्तु उसे पता नहीं होता कि वह है ही बिन्दी और वह अनजाने में खुद के ऊपर ही स्थूल बिन्दी लगाती है। नर हो या नारी, वे आपस में बातें करते समय एक दूसरे के शरीर को नहीं बल्कि आंखों के बिन्दु को ही देखते हैं क्योंकि ये बिन्दु आत्मा का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। यह विचित्रता ही है कि दैहिक आकर्षण में फंसा मनुष्य वार्ता करते समय देह पर नहीं बल्कि दूसरे की आंखों के बिन्दु पर ही एकाग्र होता है।

कर्म का आधार ही है एकाग्रता और ऐसा कोई भी कार्य जिसमें मन एकाग्र नहीं है, कर्म नहीं कहा जा सकता। यदि कोई शराब पी कर अदालत में गवाही देता है और यह साबित हो जाए कि उसने नशा किया हुआ था, तो उसकी गवाही को निरस्त कर दिया जाता है क्योंकि नशे की हालत में एकाग्रता खो जाती है। गणित का सवाल हल करता हुआ छात्र, ज्ञान व एकाग्रता से ही सही उत्तर निकाल पाता है। वायुसेना का विमान उड़ाता पायलेट यदि उच्च दर्जे की एकाग्रता न रखे तो दुर्घटना हो सकती है। एकाग्रता से किया गया कार्य कला का रूप ले लेता है। यूनान के किसी गांव का एक लड़का जंगल से लकड़ियां काट कर, उनका

गट्ठर सिर पर रख कर बेचने हेतु शहर जा रहा था। रास्ते में एक विद्वान व्यक्ति का ध्यान गट्ठर में लकड़ियों की कलात्मक सजावट पर गया। उस विद्वान ने लड़के से पूछा कि क्या लकड़ियां तुमने खुद बांधी हैं ? लड़के के हां कहने पर विद्वान ने कहा कि क्या तुम इन लकड़ियों को बिखेर कर दोबारा इसी तरह से बांध कर दिखा सकते हो ? लड़के ने गट्ठर नीचे उतार कर लकड़ियाँ बिखेर दीं और पुन: पहले की तरह कलात्मक ढंग से लकड़ियों को बांध दिया। विद्वान काफी प्रभावित हुआ और लड़के से कहा कि तुम मेरे साथ रहो, मैं तुम्हें उच्च शिक्षा दिलाऊंगा। लड़का अनाथ था अत: मान गया। वह लड़का बाद में यूनान के महान दार्शनिक पाइथोगोरस के नाम से प्रसिद्ध हुआ और वह विद्वान था यूनान का महान तत्व ज्ञानी डेमोक्रीट्स। छोटी से छोटी कला भी जब एकाग्रता से निखर पाती है, तो भविष्य के अवसरों का द्वार खोल देती है।

एकाग्रता की शक्ति ईश्वर ने सभी को दी है। अन्तर बस इस बात का है कि कोई इसका व्यर्थ कार्यों में उपयोग करता है और कोई इसे अच्छे कार्यों में लगाता है। चोर, बहुरूपिये, पॉकेटमार, ज़ालसाज़ आदि अपने कार्यों में कमाल की एकाग्रता रखते हैं। उसी प्रकार मेधावी छात्र, प्रयोगशाला में लगे अनुसन्धानकर्त्ता, क्रिकेट खेलता खिलाड़ी, गीत गाता गायक आदि अपने-अपने कार्यों में एकाग्रता के बल पर कामयाबी के शिखर चूमते हैं। कोई अगर यह समझता है कि उसे ईश्वर ने एकाग्रता की शक्ति प्रदान नहीं की है, तो वह अपनी इस आन्तरिक शक्ति का इस्तेमाल करना नहीं जानता । हां, यह संभव है कि उसकी स्मृति में व्यर्थ की बातें इतनी ज्यादा भरी हों कि उसका मन व्यर्थ में भटकने के कारण किसी एक कार्य में एकाग्र नहीं हो पाता हो। लगन की अग्नि से, व्यर्थ के बोझ के होते हुए भी किसी एक कार्य में मन को एकाग्र किया जा सकता है। इससे भी बढ़ कर है योग की अग्नि जिससे व्यर्थ के बोझ को दग्ध कर इससे हमेशा के लिए मुक्त हुआ जा सकता है। परन्तु योग की अग्नि तब प्रज्वलित हो, जब ईश्वरीय ज्ञान की शक्ति से काम-अग्नि व क्रोध-अग्नि का शमन किया जाए।

आजकल बिजली की कमी को देखते हुए इन्वर्टर का प्रयोग हो रहा है जिसमें एक बड़ी बैटरी से लाइट, पंखे, टेलीविजन आदि चलाये जाते हैं। परन्तु जैसे-जैसे बैट्री डिस्चार्ज होती जाती है, वैसे-वैसे कुछ ट्यूबलाइट, पंखे बंद करने पड़ते हैं ताकि बिजली के कई स्थानों पर जा रहे कमजोर प्रवाह को एक स्थान पर एकाग्र किया जा सके। मन की दशा भी कुछ ऐसी ही है। मन के कमजोर संकल्प जब कई स्थानों पर तेजी से घूमते हैं तो मानसिक कमजोरी, तनाव, बेचैनी, अनिद्रा आदि लाते हैं। मन को एक सकारात्मक संकल्प में एकाग्र करके ही इन सब आधियों (मानसिक बीमारियों) से मुक्त हुआ जा सकता है। आज आम व्यक्ति मानसिक रूप से बीमार है क्योंकि उसकी आत्मा रूपी बैटरी कई प्रकार की चिन्ताओं, विकारों आदि से डिस्चार्ज हो गई है और एक परमपिता परमात्मा शिव से योगयुक्त हो कर अपनी आत्मा को चार्ज करने का उसे ज्ञान नहीं है। जितने भी आविष्कारक हुए हैं उन्हें प्रतिभावान माना जाता है, परन्तु उससे पहले वे एकाग्रतावान थे।

आज समाज में मेडिटेशन सीखने की होड़ है, जो कि एक प्रकार से मन की एकाग्रता सीखने की बात है। परन्तु एकाग्रता के लिए काफी अभ्यास चाहिये। इसे एक दिन में प्राप्त नहीं किया जा सकता। परन्तु लगन की अग्नि जली हो तो एकाग्रता अल्पकाल में ही प्राप्त हो जाती है अर्थात् **एकाग्रता की जननी है लगन।** लगन होती है किसी लक्ष्य के प्रति। परन्तु लक्ष्य के प्रति लगन पक्की तब होती है जब आत्मविश्वास व निश्चय हो कि लक्ष्य को हर हालत में प्राप्त करना ही है और मेरे में उसे प्राप्त करने की क्षमता है। **आदि शंकराचार्य** ने आठ साल की आयु में ही लक्ष्य निर्धारित कर लिया और घर छोड़ दिया। सोलह साल की आयु में ही उन्होंने अपने गुरु का आश्रम भी छोड़ दिया। उसके पश्चात् मात्र सोलह साल में वैदिक धर्म में प्राण फूंक दिये। मात्र बत्तीस साल की आयु में ही उन्होंने इतना कुछ एकाग्रता के बल द्वारा कर डाला और फिर इस संसार से

विदा हो गये। स्वामी **विवेकानन्द** ने श्री रामकृष्ण परमहंस को गुरु करने के बाद मात्र 15 साल का जीवन जीया और एक आध्यात्मिक क्रांति कर गये। हेनरी फोर्ड, धीरूभाई अम्बानी, टाटा, बिड़ला, बिल गेट्स आदि के अन्दर जो प्रतिभा थी, उसके पीछे उनकी एकाग्रता की शक्ति थी। वर्तमान में भी लता मंगेशकर, सचिन तेन्दुलकर आदि विभूतियों ने अपने-अपने क्षेत्र में एकाग्रता की शक्ति से ही आसमान छुआ है।

थॉमस एल्वा एडीसन ने 30 साल तक अपने को प्रयोगशाला में कैद करके हज़ार से ऊपर आविष्कार किये और ऐसा करते हुए अपने नाम व पहचान से भी मानो विस्मृत हो गए । एक बार अमेरिका में युद्ध के दौरान अन्न की कमी होने पर राशन कार्ड जारी कर दिए गये। एडीसन की पत्नी ने उन्हें राशन लाने भेजा। वहां भीड़ में जब बार-बार उनका नाम पुकारा गया तो औरों की तरह वे भी गर्दन घुमा कर देखने लगे कि एडीसन राशन प्राप्त क्यों नहीं कर रहा है। एक व्यक्ति ने एडीसन को पहचान लिया और कहा कि तुम्हारा ही तो नाम पुकारा जा रहा है, तो फिर खड़े क्यों हो? एडीसन झेंप गया और बोला कि भई 30 साल से मुझे नाम ले कर किसी ने पुकारा ही नहीं है, अत: मैं भूल गया था कि मैं ही एडीसन हूँ। राशन ले कर एडीसन ने उस व्यक्ति से पूछा कि तुमने कैसे जाना कि मैं ही एडीसन हूं ? उस व्यक्ति ने कहा कि तुम्हारे द्वारा जो निरन्तर आविष्कार किए जा रहे हैं, वे तुम्हारी फोटो के साथ अखबार में छपते रहते हैं। एडीसन ने खुद की दैहिक पहचान को भी भुला कर लगन की अग्नि व मानसिक एकाग्रता से इतने आविष्कार किये ।

ध्यान या एकाग्रता के भंग होने के कुछ कारण हैं :- 1. अरुचिकर कार्य, 2. अतृप्त इच्छाओं की खींच, जैसे धन, पद, मान-सम्मान, वैभव, भौतिक पदार्थों का क्रय इत्यादि। 3. स्मृति में दर्ज दुखदायी व सुखदायी बातें। 4. आलस्य के कारण कार्य को टालने की वृत्ति। 5. असंतोषी स्वभाव।

जो जितना ज्यादा कर्म में प्रवृत्त रहता है, उसकी एकाग्रता उतनी ही अधिक होती है क्योंकि कर्म भी ध्यानपूर्वक किए जाते हैं और नित्य किए जा रहे कर्म से स्वत: एकाग्रता का अभ्यास होता रहता है। गीता एक अर्जुन को नहीं बल्कि किसी भी पुरुषार्थी को कर्मयोगी बनने के लिए कहती है। कर्मयोगी अर्थात् कर्मों में फल और आसक्ति का त्यागी। ईश्वरीय स्मृति से शुद्ध हुआ मन ही किए जा रहे कर्म में अनासक्त भाव से एकाग्रचित्त होता है।

किसी चीज़ को समझने के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है, परन्तु ज्ञान को समझने के लिए ध्यान-एकाग्रता की आवश्यकता होती है। परन्तु ज्ञान को महसूस करने के लिए अनुभव की आवश्यकता होती है। किसी भी कार्य का अनुभवी व्यक्ति एकाग्रता का गुण अवश्य रखता है। कहा जाता है कि द्रोणाचार्य ने जब एकलव्य को ज्ञान देने से मना कर दिया, तो उसने द्रोणाचार्य की प्रतिमा के सामने तीरंदाजी का एकाग्रतापूर्वक अभ्यास किया। उसने इस कला में महारत हासिल की और अर्जुन से भी ज्यादा अनुभवी बन गया। एकाग्रता अर्थात् एक-आग्रहता जिसे एकलव्य ने कर दिखाया। एकलव्य का जो आग्रह गुरु द्रोणाचार्य ने पूरा नहीं किया, उसे एकलव्य ने लगन व एकाग्रता के बल से पूरा कर दिखाया।

शान्ति-अशान्ति, सुख-दुख, सफलता व असफलता आदि निर्भर हैं एकाग्रता की शक्ति पर और मनुष्य के जीवन की सबसे बड़ी सफलता है परमपिता शिव को यथार्थ रीति से पहचान कर उनसे योगयुक्त होना और पावन बन कर देव-पद प्राप्त करना। परन्तु आज का अशान्त, दुखी व विक्षिप्त मनुष्य सहज समाधान चाहता है क्योंकि ईश्वर-प्रदत्त ज्ञान को सुनने-समझने का धैर्य व एकाग्रता भी उसके पास आज है नहीं। ऐसे में निमित्त ब्रह्माकुमार-कुमारियां मात्र प्रेम की दृष्टि, शुभ-भावना व शुभ-कामना के प्रकंपन को चात्रक मनुष्यों पर एकाग्र कर उन्हें शान्ति की अनुभूति करा रहे हैं। फिर शान्ति की महसूसता उनमें ईश्वरीय ज्ञान को समझने व अनुभव करने की एकाग्रता प्रदान करती है। आइये सहज राजयोग के प्रयोग से अपनी इस अद्‌भुत शक्ति का विकास करें। ❖

दान, महादान और वरदान

ब्रह्माकुमारी मीनाक्षी, लोखंडवाला (बोरीवली), मुंबई

रामयोग नाम का व्यापारी एक नगर में रहता था। जैसा वह स्वयं धर्मपरायण और संस्कारी था, उसकी सन्तान भी वैसी ही थी। कुछ समय बाद रामयोग के पुत्रों ने व्यापार की बागडोर सम्भाल ली पर पिता के मार्गदर्शन की वे अब भी खूब कद्र करते थे। रामयोग का ज्यादा समय भक्ति में बीतने लगा।

सबकुछ ठीक-ठाक होते हुए भी रामयोग को ऐसा महसूस होने लगा कि जीवन में कुछ अधिक चाहिए परन्तु क्या, यह समझ में नहीं आ रहा था। एक बार एक महात्मा से उसने दिल की बात कह डाली। महात्मा जी ने कहा, आपके जीवन में कोई दुख नहीं है परन्तु दुख न होने का अर्थ यह नहीं है कि आप सुखी हैं ही। सामान्य मनुष्य के लिए रोजाना की जरूरतें पूरी हो जाना ही सुख है परन्तु जो असामान्य हैं, अपने अन्तर्मन की आवाज सुन सकते हैं उन्हें कुछ अधिक चाहिए होता है क्योंकि कुछ अधिक करने की योग्यता ऐसे लोगों में होती है इसलिए आप बेचैन रहते हैं। अभी तक आपने अपने कर्त्तव्य पूरे किए पर विधाता और प्रकृति आपसे कुछ अधिक कराना चाहते हैं अत: आप पुण्य कर्म कीजिए, समस्या का हल हो जाएगा।

रामयोग ने पूछा, क्या पुण्य कर्म करूँ? महात्मा जी ने कहा, 'दान', दान-कर्म सब पुण्यों में श्रेष्ठ पुण्य है। रामयोग के पास, कई पीढ़ियाँ खा सकें इतना धन था और अभी उसके पुत्र भी खूब कमा रहे थे अत: उसने अन्न, धनराशी, वस्त्र और अनेक प्रकार की अन्य चीजें जी खोलकर दान करनी शुरू कर दी।

परिवार के सभी सदस्यों को यह बात अच्छी लगी। सभी ने कहा, आप जो करना चाहें, खुले दिल से करें, हमें कोई आपत्ति नहीं है।

रामयोग के दान-कर्म की ख्याति सभी दिशाओं में फैलने लगी। जो भी याचक आते, सन्तुष्ट होकर जाते और उसकी खूब महिमा भी करते। दानवीर कर्ण और राजा हरिश्चन्द्र से उसकी तुलना होने लगी। उसकी समस्या तो मिट चुकी थी पर एक बात बढ़ गई थी, वो थी 'अभिमान'। उसकी बढ़ती कीर्ति ने कब उसके अभिमान को हवा दी, उसे पता ही नहीं चला। धीरे-धीरे बढ़ते अभिमान की बू उसकी वाणी और कर्मों से आने लगी परन्तु अभिमान पर कौन आघात करे? वह सबका आदरणीय था। उससे होने वाली प्राप्ति के एवज में उसके अभिमान को नजरअन्दाज कर देना, यह लोगों के लिए बहुत सस्ता सौदा था।

पुण्य कर्म हमेशा उन्नति की ओर ले जाते हैं। रामयोग के जमा पुण्य कर्मों ने उसके लिए उन्नति का एक नया मार्ग खोल दिया। गाँव के मन्दिर में एक तेजस्वी पुरुष आये। रामयोग कीमती उपहार लेकर उनसे मिलने गया पर तेजस्वी ने उड़ती-सी नजर उपहारों पर डालकर उन्हें लेने से इन्कार कर दिया। रामयोग को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने आज तक ऐसा कोई सन्त-महात्मा देखा-सुना न था जो स्वेच्छा से दिए गए उपहारों को स्वीकार न करे। रामयोग के चेहरे पर आश्चर्य के भाव पढ़कर तेजस्वी ने पूछा, आप ये उपहार क्यों देना चाहते हो? रामयोग ने कहा, ताकि आपकी सेवा का पुण्य मिले। तेजस्वी बोले, कुछ वस्तुएँ देकर पुण्य भी और प्रशंसा भी, दोनों ले लेना, यह तो बहुत कम देकर बहुत ज्यादा लेना हो गया। रामयोग के अभिमान पर भारी प्रहार हुआ।

तेजस्वी आगे बोले, हे व्यापारी, हम जो भी देते हैं उसका फल तो हमें प्राप्त हो ही जाता है, हम नहीं चाहेंगे तो भी, फिर भी स्वार्थ रखकर कर्म करना, क्या यह अधिक लालच नहीं है? रामयोग किसी प्रतिक्रिया की स्थिति में नहीं था, केवल सुन रहा था। तेजस्वी ने बोलना जारी रखा, रामयोग, अगर कुछ देने की आपकी इच्छा है ही तो मुझे कुछ ऐसा दो जो कभी नष्ट न हो, तो मैं अवश्य स्वीकार करूँगा। रामयोग घर लौट आया और साक्षी होकर अपने आपको तथा अपने अभिमान को देखने लगा। तेजस्वी ने ज्ञान के छींटे डालकर उसके विवेक को जागृत किया था

जो कि अभिमान के नशे में सो गया था। आइने में चेहरे की तरह उसे अपना अभिमान स्पष्ट दिख रहा था। अगली सुबह वह फिर तेजस्वी के सामने जा पहुँचा और हाथ जोड़कर कहा, महाराज, मुझे क्षमा करें और अभिमान के पिंजरे से मुक्ति तथा आत्मउन्नति के लिए उपदेश करें।

तेजस्वी ने कहा, पुण्य के फल के रूप में कीर्ति मिलती अवश्य है परन्तु मनुष्य को जागृत रहना चाहिए। पुण्य का फल भोगें पर योग के साथ भोगें, नहीं तो अभिमान बढ़ता जाता है और पुण्य क्षीण होता जाता है। दूसरी बात, आप इतने समय से दान कर रहे हो, पर आपसे धन, वस्त्र और वस्तुएँ लेने वालों ने आपसे दान का गुण लिया क्या? क्या आपकी तरह कोई दानी बना? वस्तुओं का दान, पुण्य-कर्म है परन्तु गुण का दान तो महादान है। एक रामयोग से इतने लोगों की जरूरतें पूरी हुई, कई रामयोग हो जाएंगे तो कोई अभावग्रस्त बचेगा ही नहीं। तुम जो दान करते आए हो, उससे तुम्हारा तो पुण्य बना लेकिन लेने वाले का क्या बना? सृष्टि के नियमानुसार जो हम देते हैं, वह हमें वापस मिलेगा। तुमने दिया, तुमको मिलेगा पर जिनको मिला, उनको लौटाना पड़ेगा। **लेकिन महादान बहुत ऊँची भावना है। इसका अर्थ है जैसे तुम पुण्य का खाता बना रहे हो, वैसे जिनको दान दे रहे हो, वे भी अपना पुण्य का खाता बनाने लायक बनें। इसके लिए धन या किसी अन्य भौतिक क्षमता की आवश्यकता नहीं है, इसके लिए आत्मा की शुद्धि की आवश्यकता है। जब आत्मा शुद्ध हो जाती है तो ऐसी आत्मा का मन, वचन, कर्म औरों को श्रेष्ठ कर्म की प्रेरणा देता है। तुम्हारे कर्मों को देखने वाले, तुम्हारे बिना कहे प्रेरित हों कि हम भी ऐसे कर्म करें, इसे कहते हैं महादान।**

रामयोग ने पूछा, इसके लिए मैं क्या करूँ?

तेजस्वी बोले, अपने अन्दर उतरो, अपने सत्य स्वरूप की खोज करो, ध्यान से ही आत्मशुद्धि सम्भव है। इसी से आत्म-नियन्त्रण होगा। अगले दिन से रामयोग मन्दिर में तेजस्वी के सामने ही ध्यान करने बैठने लगा। दान-कर्म करने का कार्य उसने नौकरों को सौंप दिया पर मन तो एकाग्र होता ही नहीं था, अपनी समस्या उसने तेजस्वी को बताई।

तेजस्वी ने कहा, आपका मन मायाजाल में बुरी तरह फंसा है, इससे निकलने के लिए संसारी जीवन का संन्यास आवश्यक है, मोह का बन्धन कटने से ध्यान लगाना थोड़ा सरल हो जाएगा। महादानी बनने के लिए अपने पास जो है उसका त्याग करो। सामान्यजन से अधिक कुछ करना चाहते हो तो यह असामान्य कदम उठाना पड़ेगा।

रामयोग घर लौटा। उसने सब तरफ से विचार किया तो लगा कि वह संन्यास ले सकता है क्योंकि परिवार के प्रति सभी कर्त्तव्य पूरे निभा चुका है। वह स्वभाव से बहुत न्यायी था, इस बार भी अपना निर्णय लेने से पहले उसने परिवार की अनुमति लेने की सोची। अगली सुबह परिवार के सभी सदस्यों के सामने अपनी बात रखी।

सारे परिवार का आपस में भी और रामयोग के साथ भी बहुत स्नेह था। पत्नी ने कहा, आपके निर्णय में मैं भी सहभागी हूँ, मैं भी आपके साथ चलूँगी। पुत्रों ने कहा, माँ जो कह रही हैं, वह उनके हिसाब से बिल्कुल ठीक है। हम आपको रोकेंगे नहीं, न ही साथ चलने को कहेंगे परन्तु आप हमें छोड़कर जा रहे हो, यह निर्णय केवल आपका होगा। इसमें हमारी अनुमति नहीं है, इस निर्णय से हम दुखी भी हैं परन्तु हम अपने प्रेम को आपकी बेड़ी नहीं बनाएँगे। आपका निर्णय अति उत्तम है पर क्या उसे पूरा करने के लिए हमें छोड़ना जरूरी है? क्या हमारे साथ रहकर यह संभव नहीं है? एक सरल-सा सवाल हम पूछना चाहते हैं कि लोककल्याण की राहों में मोह बन्धन हो सकता है पर क्या शुद्ध प्रेम भी बन्धन है? आपको जो करना है, जैसे करना है, कीजिए। चाहे तो अलग घर में रह लीजिए पर हमें छोड़कर मत जाइये। आप अनेकों का कल्याण करेंगे परन्तु उसका पहला सोपान हमारे अकल्याण से शुरू करेंगे? हमको पिता-विहीन करके दूसरों को सुख देना ऐसा ही होगा जैसे दिए तले अन्धेरा। अपने निर्णय में हमारे कल्याण का भी विचार अवश्य रखिए, आगे आपकी मर्जी।

रामयोग दुविधा में फंस गया। पुत्रों की बातें उसे पूरी तरह स्वीकार्य लग रही थी। उसने अपने मन की दुविधा तेजस्वी को बताई। तेजस्वी ने कहा, यही तो माया है जो

तुम्हारे पैरों की बेड़ी बन रही है, इसे पहचानो। घर-गृहस्थ में रहते ध्यान-योग संभव नहीं है। रामयोग ने पूछा, क्या गृहस्थियों के लिए गृहस्थ में रहकर आत्मोन्नति संभव नहीं? पुत्रों की कही बातें मुझे उचित लग रही हैं। मेरे पुत्र स्वार्थवश मुझे नहीं रोक रहे परन्तु प्रेम भी तो अपने आप में एक कर्त्तव्य है। प्रेम रूपी कर्त्तव्य को त्यागकर लोक-कल्याण कैसे संभव है? कृपया ऐसा मार्ग बताएँ कि मेरा परिवार भी दुखी न हो और मेरा संन्यास भी हो जाए।

तेजस्वी के चेहरे पर आज पहली बार थोड़ी शिकन आई, फिर भी कहने लगे, घर-गृहस्थ में रहकर संभव होता तो संन्यासी घरबार क्यों छोड़ते? बड़ी प्राप्ति के लिए यह त्याग बहुत छोटा है और अति आवश्यक है। तुम्हारे पुत्रों की बातों में ज्ञान का अंश है पर तुम लक्ष्य से विचलित हो रहे हो। घर में रहकर आत्म-नियन्त्रण कर सको, ऐसा कोई मार्ग नहीं है। सोचो, एक बार फिर सोचो। कल ब्रह्ममुहूर्त में हम निकलेंगे, तुमको चलना हो तो हमारे साथ चलना। हरिद्वार में हमारा आश्रम है।

मानसिक द्वन्द्व से घिरा रामयोग घर लौटा। एक तरफ योगी की बातें, दूसरी तरफ पुत्रों की बातें – वह दुविधा में फंसा था। रात को वह रो पड़ा, ''हे ईश्वर, मेरा मार्गदर्शन करो, मेरे गुरु बन जाओ, मुझे दिशा दिखा दो प्रभु! आप माता, पिता, बन्धु, सखा हो, आपसे मिलन इतना कठिन कैसे हो सकता है...।'' प्रार्थना करते-करते ब्रह्ममुहूर्त होने को आया, वह फिर मन्दिर की ओर चल पड़ा पर उसे खुद भी पता नहीं था कि वह क्या करने वाला है। मन्दिर के बरामदे में एक व्यक्ति बैठा था। रामयोग ने ध्यान से देखा, उसकी आँखें खुली थी मगर एकाग्र थी। खुली आँखें होते भी वह कहीं और था। उसके चेहरे पर जो आनन्द था, ऐसा तो रामयोग ने आज तक किसी के चेहरे पर भी नहीं देखा था। आनन्द के साथ-साथ चेहरे पर देव-मूर्तियों जैसी दिव्य मुस्कान भी थी। रामयोग उसे अपलक देखता रहा। उसका अपना मन भी आनन्द से भर गया। वह अपनी दुविधा के साथ ही यह भी भूल गया कि वह तेजस्वी से मिलने आया था। कुछ समय बाद उस व्यक्ति ने रामयोग की ओर बड़े प्रेम से देखा और कहा, ओम शान्ति, आत्मा भाई।

रामयोग मानो होश में आया। रामयोग ने ऐसा आत्मीयता और अलौकिकता भरा संबोधन अभी तक सुना भी नहीं था और अनुभव भी नहीं किया था। उसने हाथ जोड़े और पूछा, आप कौन हैं? उस व्यक्ति ने कहा, मेरा नाम अमर है, मैं एक छोटा-सा व्यापारी हूँ, व्यापार के सिलसिले में इस नगर में आना हुआ है, रात ही पहुँचा था, देर हो गयी थी इसलिए रात मंदिर में बिता दी। यहाँ कहीं अगर धर्मशाला या रहने का कोई अन्य ठिकाना हो तो कृपया बता दीजिए। रामयोग ने तुरंत कहा, आप मेरे घर चलिए। अमर बोले, आपके घर? नहीं, नहीं, रहने दीजिए, मैं कहीं भी रह लूँगा, बस, आप मेरा मार्गदर्शन कीजिए, हो सकता है मुझे एक सप्ताह से ज्यादा रुकना पड़े और फिर भोजन भी मैं अपने हाथों से बनाकर खाता हूँ इसलिए आप तकलीफ नहीं कीजिए, बस ठिकाना ढूंढ़ने में आपका सहयोग मिले, तो बहुत कृपा हो जायेगी मेरे लिए।

रामयोग आग्रह के साथ कहने लगा, अमर जी, तकलीफ की कोई बात नहीं, आपके जैसा व्यक्ति मेरे घर अतिथि बनकर आये, यह मेरा सौभाग्य होगा। आपमें कुछ अलग ही आकर्षण और दिव्यता है इसलिए मना मत कीजिए। आपकी दृष्टि से ही मेरा मन शांत हो गया है इसलिए कृपया मुझे अपनी सेवा का मौका दीजिए। जितने भी दिन आप रहना चाहते हैं और जैसे भी रहना चाहते हैं, इंतजाम हो जायेगा परंतु आप मेरे साथ अवश्य चलिए, कृपया मना नहीं कीजिए। रामयोग का आग्रह इतना था कि अमर मुसकराते हुए हाँ कह अपना सामान लेने चला गया। तभी अचानक रामयोग को तेजस्वी की याद आयी और उन्हें ढूंढ़ने लगा। मंदिर के पुजारी ने बताया कि वो चले गये। लेकिन पता नहीं क्यों, रामयोग के मन से तेजस्वी की खींच एकदम ही समाप्त हो गयी थी। खुद में इतने परिवर्तन से वो बहुत चकित था। रात को मानो उसके जीवन में अंधकार था और अचानक रोशनी हो गयी। उसे अंदर-अंदर महसूस हो रहा था कि उसे कोई प्राप्ति हो रही है परंतु क्या, यह वो नहीं जान पा रहा था। अमर सामान लेकर आ गया

और दोनों घर की ओर चल दिये।

रास्ते में दोनों ने एक-दूसरे का बहुत ही अच्छी तरह से परिचय कर लिया। रामयोग के परिवार ने अमर का बहुत ही खुशी से स्वागत किया। उनके रहने की और अलग रसोईघर की व्यवस्था भी रामयोग ने कर ली। अपना नित्यकर्म निपटाकर अमर नगर में लौकिक कार्य अर्थ चला गया। शाम को लौटकर उसने स्वयं ही अपना भोजन बना लिया। व्यवस्था ठीक है कि नहीं, यह पूछने शाम को रामयोग उसके कमरे में गया। लगभग 6.30 बजे थे। उसने देखा, अमर सुबह की तरह ध्यान में बैठा था। चेहरे पर वही शांति और आनंद, खुली मगर दूर कहीं खोई हुई आँखें। रामयोग को बहुत अच्छा लगा। वो बिना आहट के कमरे के कोने में बैठकर उसे देखता रहा। एक घंटा बीत गया। अमर ने अपना ध्यान पूरा किया और सुबह की तरह फिर से कुछ पल रामयोग को देखता रहा। उसके दृष्टि-मार्ग से रामयोग को बहुत ही खुशी और शान्ति की अनुभूति हुई।

रामयोग के मन में अमर के प्रति बहुत ही आदर और जिज्ञासा पैदा हो रही थी। उसके कमरे से अमर का कमरा दिखाई पड़ता था। रोज सुबह 4 बजे अमर अपने कमरे की छत पर बैठकर ध्यान करता। दिनभर अपने काम की वजह से बाहर व्यस्त रहता इसलिए उसके साथ ज्यादा बात नहीं हो पाती परंतु उसके व्यवहार में अलग ही प्रकार की दिव्यता थी। सुबह-शाम जब भी अमर को थोड़ा बहुत समय मिलता तो वह अध्ययन करता और एक चार पन्नों का पत्र पढ़ता रहता था। दो-तीन दिन बीत गये। एक दिन अमर बाहर नहीं गया। उसे घर में देखकर रामयोग उसके कमरे में चला गया और बड़ी विनम्रता से पूछा, आपके पास समय हो तो मुझे कुछ ज्ञान की चर्चा आपसे करनी है।

अमर ने नम्रता से कहा, मैं आपके पास परमात्मा का संदेश और उनके अमूल्य ज्ञान की निधि लेकर आने ही वाला था, आप समय दें तो वो संदेश मैं आपको सुना दूँ। रामयोग को बड़ा आश्चर्य हुआ, परमात्मा का संदेश!! क्यों नहीं, कहिए ना, समय की कोई बात नहीं। अमर ने एक पुस्तक निकाली और चित्र दिखाते हुए उसने राजयोग का ज्ञान सुनाना शुरू किया। स्वयं की पहचान मिलते ही पहले दिन से ही रामयोग के जीवन में महान परिवर्तन की शुरूआत हुई। दूसरे और तीसरे दिन का पाठ सुनते-सुनते तो रामयोग की आँखों से आँसू निकलने लगे। परमात्मा का परिचय और उनका कर्त्तव्य, ब्रह्मा के तन में अवतरण, ये सब सुनकर रामयोग को लगा कि जिस प्राप्ति की वो कल्पना भी नहीं कर सकता था वो उसे सहज ही हो रही है। तीसरे दिन से वो ब्रह्ममुहूर्त में राजयोग के अभ्यास के लिए उठा। उसे महसूस हुआ कि ब्रह्ममुहूर्त में परमपिता परमात्मा स्वयं अपने बच्चों से मिलने आते हैं। रह-रह कर उसकी आँखें भर आ रही थीं कि भगवान उसे देख रहा है।

वह सोचने लगा, महादानी बनने के लिए सबकुछ छोड़ने की सोच रहा था मगर अब पता चला कि भगवान मुझे लेने के लिए खुद धरती पर आये हैं। मुझे जो प्राप्ति और खुशी हो रही है उसका वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। अमर ने बताया, हमें स्वकल्याण के साथ विश्वकल्याण करना है और बिना अपने परिवार को दुखी किये आप दानी, महादानी और वरदानी भी बन सकते हो। **किसी को धन-वस्तु इत्यादि देकर एक जन्म के लिए पुण्य कमाना उसे दानी कहते हैं, औरों को भी पुण्य के लिए प्रवृत्त करना, ये महादानी बनना है परंतु आप परमात्मा से जुड़कर वरदानी भी बन सकते हो। वरदानी अर्थात् जिनमें पुण्यकर्म करने की शक्ति नहीं है, अपने आत्मबल से उनसे हम पुण्य कर्म करवायें और उनका भाग्य बनायें।** व्यापारी रामयोग संन्यासी रामयोग बनते-बनते राजयोगी ब्रह्माकुमार रामयोग बन गया था। अभी वो केवल दानी, महादानी नहीं बल्कि वरदानी बनने की ओर अपने परिवार सहित अग्रसर था।

उपरोक्त कहानी का सार रूप में संदेश है – अच्छे कर्मों की समझ से दान संभव है। अच्छे कर्मों की समझ के साथ बुराई पर नियंत्रण से महादान संभव है परंतु वरदानी बनने के लिए संपूर्ण ज्ञान, विकारों को त्याग कर पूर्ण आत्मनियंत्रण और परमात्म शक्तियों की सिद्धि आवश्यक है जो परमात्मा द्वारा सिखाये गए राजयोग से ही संभव है। ❖

पुण्यात्माओं के भाने सबका भला

ब्रह्माकुमारी वेद प्रकाश मिश्र, एडवोकेट, इलाहाबाद हाईकोर्ट (उ.प्र.)

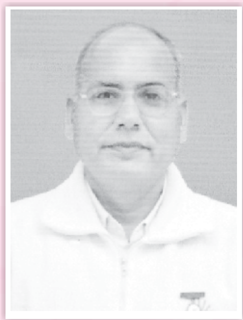

कहावत है कि एक पापी पूरी नाव को डुबो देता है लेकिन एक धर्मी अनेकों का उद्धार कर देता है। इसका एक सत्य उदाहरण प्रस्तुत करने जा रहा हूँ। इसके बारे में आप सब 28 दिसम्बर, 2016 को न्यूज चैनलों एवं अखबारों द्वारा अवगत अवश्य हुए होंगे।

हम 65 ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी भाई-बहनें, 27 दिसम्बर, 2016 को सियालदाह-अजमेर एक्सप्रेस ट्रेन से मधुबन (आबू पर्वत) जा रहे थे। फागी एवं कड़ाके की ठंड के कारण ट्रेन ग्यारह घण्टे विलम्ब से चल रही थी। ट्रेन में कोलकाता एवं कानपुर के भी कुछ भाई-बहनें सवार थे। सुबह के 5.15 बजे थे। हम सभी शिवबाबा की याद में बैठे थे। तभी ट्रेन असहज तरीके से डगमगाने लगी। हमें अहसास हो गया कि ट्रेन दुर्घटनाग्रस्त होने वाली है। मुश्किल से 15 सेकण्ड के अन्दर ही सभी तेज झटके के साथ अपनी-अपनी बर्थ से तेजी से नीचे गिरने लगे। इसी बीच बोगी भी पलट गई।

मैं अपनी ऊपरी बर्थ पर था। मैंने अविलम्ब प्यारे शिवबाबा को जैसे ही पुकारा वैसे ही एहसास हुआ कि मुझे किसी ने अपनी गोद में उठा लिया है। आश्चर्यजनक बात तो यह थी कि बोगी पलटने के बाद भी सभी सुरक्षित थे। अंधेरा होने के कारण कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था। दरवाजे एवं खिड़कियाँ बंद थीं। हमें समझ में नहीं आ रहा था कि बाहर कैसे निकलें। मैंने शिवबाबा से पूछा, बाबा किधर जायें? तभी कुछ लोगों की आवाजें आई कि आगे निकलने का रास्ता है। सभी का सामान भी इधर-उधर बिखर गया था। जो जरूरी सामान आसानी से मिल सका वह लेकर हम बोगी के अन्तिम छोर से सुरक्षित बाहर आये। बाहर का मंजर तो बड़ा भयावह था। सभी बोगियाँ रेलवे लाइन के दोनों ओर दूर-दूर तक क्षतिग्रस्त फैली हुई थीं तथा दो बोगियाँ नहर में धंसी हुई थीं।

पास के कुछ रहवासी पहुँच गये थे। सभी ने बताया कि यह बड़ी भारी दुर्घटना है। हाल पूछा तो बताया गया, सभी सुरक्षित हैं। मेरा मोबाइल ट्रेन में छूट गया था। कानपुर 50 कि.मी. दूर होने से प्रशासन के लोग भी मदद के लिए पहुँचे थे। बाद में पता चला कि मामूली रूप से कुछ यात्री घायल हुए हैं, अंग भंग किसी का नहीं हुआ। सबसे बड़ी बात तो यह कि किसी की भी मौत की सूचना न तो मिली और न ही देखने में आयी। मामूली चोट के अतिरिक्त सभी यात्री सुरक्षित थे। शिवबाबा को हम सभी धन्यवाद दे रहे थे।

मुझे तो एक कहानी याद आई कि दुर्घटनाग्रस्त हो रहे प्लेन में सभी चिन्तित थे। एक बच्चा मुस्करा रहा था। कुछ साथियों ने उससे कहा कि कुछ ही क्षणों में हम सब मौत के मुँह में समा जायेंगे। उस बच्चे ने कहा, कुछ भी नहीं होगा क्योंकि यह प्लेन मेरे पिताजी चला रहे हैं। उस बच्चे की तरह ही, दुर्घटनाग्रस्त हो रही ट्रेन में, हम भी स्वयं को सर्वशक्तिवान परमपिता शिवबाबा को सौंपकर निश्चिंत हो गये। दुर्घटना की भयावह स्थिति और उसमें सभी को सुरक्षित पाकर लगा कि परमपिता ने सूली से कांटा बना दिया है। बार-बार वाह बाबा वाह! दिल से निकल रहा था। आनन्द की लहरें अन्दर ही अन्दर प्रवाहित हो रही थीं। शिवबाबा की गोद का और अंग-संग का अहसास हो रहा था।

तभी एक भाई ने पूछा कि मधुबन चलने का क्या विचार है? मेरा तो चेहरा खिल उठा, तुरन्त हाँ कर दिया और दौड़कर अपने ग्रुप लीडर से वापसी टिकट लेकर आगरा

पहुँचने का लोकेशन लेने लगा। तभी स्टेशन मास्टर ने बताया कि इंजन सहित सुरक्षित बची आठ बोगियाँ अजमेर भेजी जायेंगी। हम लोग जल्दी-जल्दी एक बोगी में आकर बैठ गये और ट्रेन के चलने का इंतजार करने लगे।

प्रशासन तथा स्वयंसेवी संस्थाओं की तरफ से यात्रियों के लिए नाश्ता, चाय, पानी, दूध का इंतजाम किया जा रहा था। सभी की जुबान पर ईश्वर का धन्यवाद ही सुनाई दे रहा था। जब टी.वी.न्यूज चैनल वालों को बताया गया कि हम ढाई-तीन सौ ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी भाई-बहनें हैं और शिवबाबा से मिलन मनाने माउण्ट आबू जा रहे हैं, तब उन लोगों ने कहा कि आप जैसे लोगों के कारण ही सारे यात्री सुरक्षित बचे हैं, नहीं तो दुर्घटनाग्रस्त बोगियों को देखकर आश्चर्य लगता है। अलौकिक शक्ति का ही यह चमत्कार है। एक ब्रह्माकुमार भाई के मुख से निकला कि शिवबाबा ने सबको बचा लिया। दूसरे यात्री ने कहा, भोलेबाबा की सब पर कृपा दृष्टि रही। एक मुस्लिम यात्री ने कहा, अल्लाहतआला की बड़ी मेहरबानी से सभी सुरक्षित बच गये। तभी ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी भाई-बहनों ने आपस में चर्चा की कि शिवबाबा ने मानो प्रत्यक्षता की एक झलक दिखाई है। ❖

शान्तिवन में आकर हृदय परिवर्तन हुआ

जे.पी.पाण्डे, सेवानिवृत्त इन्जीनियर, हरिद्वार

वी.एच.ई.एल.कंपनी में 41 साल सेवा करने के बाद 2014 में मैं इन्जीनियर के पद से सेवानिवृत्त हुआ। सन् 1971 से जनसेवा कर रहा हूँ। वर्तमान समय उत्तराखंड कांग्रेस कमेटी के प्रदेश सचिव पद पर एवं चिन्हित राज्य आन्दोलनकारी समिति (रजि.) के केन्द्रीय अध्यक्ष के रूप में सेवारत हूँ। हरिद्वार को उत्तराखंड में सम्मिलित कराने एवं उत्तराखंड राज्य निर्माण में मेरी अग्रणीय भूमिका रही है।

आजकल बाबाओं के कारनामे देख मुझे बाबा शब्द से बड़ी नफरत थी परन्तु मैंने कभी भी अपनी पत्नी कमला पाण्डे को हरिद्वार के ब्रह्माकुमारी आश्रम में जाने से नहीं रोका। वे तीन सालों से मुरली सुनने जाती हैं। एक दिन निमित्त ब्रह्माकुमारी बहन ने उनको कहा कि अपने पति को भी यहाँ आश्रम में लेकर आओ। मैं आश्रम गया, बहन जी ने मुझे समझाया परन्तु मैंने उनको एक ही बात कही कि मैं राजनैतिक व्यक्ति हूँ, मेरी समझ से ये सब बहुत दूर की बातें हैं।

सन् 2016 में, 22 नवम्बर से 26 नवम्बर तक शान्तिवन में आयोजित धर्म सम्मेलन में मैंने सबके विचार सुने। शान्तिवन में जो व्यवस्था और शान्ति मिली, अन्यत्र कहीं नहीं। मुझे ब्रह्माकुमारीज के समस्त सेवाधारियों का व्यवहार बहुत अच्छा लगा। शान्तिवन में पधारे हुए सभी सदस्य परिवार जैसे लगे और मेरा हृदय परिवर्तन हुआ। जब माउण्ट आबू घूमने गए तब झील के पास पैर के नीचे एक पत्थर आने से मेरा पैर सूज गया और मुझे अस्पताल ले जाया गया। वहाँ डॉक्टर ने फ्रैक्चर बताया। हरिद्वार आकर पुन: एक्सरे करवाया और फ्रैक्चर पर एक माह के लिये पलस्तर लगा दिया गया। पलस्तर लगने के बाद जब दर्द हो रहा था तब मैंने हृदय से बाबा का नाम लिया और दर्द समाप्त हो गया। महसूस होने लगा कि वास्तव में बाबा कोई दैविक शक्ति हैं। ❖

विशेष सूचना

नए वर्ष 2017-18 के लिए ज्ञानामृत पत्रिका का वार्षिक शुल्क 100/- रहेगा। अकाउंट के हिसाब से अप्रैल से चूंकि नया वर्ष शुरू होता है इसलिए अप्रैल 2017 से बनने वाले नए सदस्यों से शुल्क 100/- वार्षिक लिया जाएगा।

व्यवहारिक बोलचाल

ब्रह्माकुमारी पूजा, रोहतक

आधुनिकता के नाम पर आज समाज में सादगी एवं शालीनता खत्म होती जा रही हैं लेकिन स्टाइल और स्टैण्डर्ड के नशे में अपनी नैतिकता और सामाजिक मूल्य हमें नहीं भूलने चाहिएँ। हम खुद को चेक करें, हमारी बोलचाल में कहाँ तक सरलता, धैर्य, सच्चाई और सम्मानजनक शब्द हैं।

नकारात्मक, कमजोर, अपमानजनक शब्दों का प्रयोग

पहले के लोगों के पास बोल-चाल का ढंग बहुत व्यवहारिक था। वे एक-दूसरे को सम्बोधित करने के लिए सम्मान युक्त शब्दों का इस्तेमाल करते थे जैसे श्रीमान जी, श्रीमती जी, बहन जी, भाई जी, आप या फिर देवी जी आदि-आदि परंतु आज हम देखते हैं कि आपस में एक-दूसरे से तू, तुम....या फिर सीधा नाम लेकर बातें करते हैं जिसमें न तो बड़ों के प्रति सम्मान है, न छोटों के प्रति प्यार है। कई बार तो यह भी देखने में आता है कि लोगों की शक्ल-सूरत या रंग-रूप को देखकर या शरीर की बनावट या कार्य-व्यवहार के आधार पर कोई नाम दे दिया जाता है जैसे, बच्चे अपने स्कूल टीचर का उप-नाम निकाल देते हैं, दोस्तों के उप-नाम निकाल देते हैं। ऐसा सिर्फ बच्चों के साथ नहीं है। बच्चों ने भी ये चीजें बड़ों से ली हैं। हम स्वयं भी चेक करें कि सारे दिन में कितनी बार हम नकारात्मक, कमजोर एवं अपमानजनक शब्दों का प्रयोग करते हैं।

कमा रहा है वाणी द्वारा पाप

कुछ लोग तो बातें करते हुए काम की बातें कम एवं गालियाँ ज्यादा देते हैं और इसको अपना बड़प्पन समझते हैं। ज्यादातर देहातों की तरफ ये सब अधिक देखने को मिलता है। आज मानव अपमानजनक शब्द बोलता है, कटु शब्द बोलता है, व्यंग भरे शब्द बोलता है,

अहंकारवश बोलता है, गाली देता है, रोब से बोलता है एवं नीरसता के शब्द बोलता है अर्थात् वाणी के द्वारा न जाने कितने पाप वह कमा रहा है जिसका अंश मात्र भी आभास उसको नहीं है।

कटु वाणी का परिणाम झगड़े

कहते हैं, तलवार का घाव भर जाता है लेकिन वाणी का नहीं। इतिहास गवाह है, कितनी बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ सिर्फ और सिर्फ कटु वाणी की वजह से हुई हैं। आज भी आधे से ज्यादा लड़ाई-झगड़े कटु वाणी का परिणाम हैं। कबीर जी ने कहा है –

वाणी ऐसी बोलिये मन का आपा खोये।
औरन को शीतल करे आपहु शीतल होये।।

भावार्थ है, किसी को कुछ भी गलत बोलने से पहले हमें सोचना चाहिये क्योंकि वह दूसरों के कानों तक बाद में जाता है, पहले हमारे कानों में आता है।

कड़वी से कड़वी चीज

एक बार एक अनुसंधानकर्त्ता ने अनुसंधान का विषय लिया कि दुनिया में कड़वी से कड़वी चीज क्या है? काफी दिनों की खोज के बाद भी उसे उत्तर नहीं मिला। जब घर आया तो उसकी बीवी ने अनाप-शनाप बोलना शुरू कर दिया। उसने तुरंत अपनी बीवी का धन्यवाद किया कि उसकी थीसीस आज पूरी हो गई। थीसीस के अंत में उसने यही लिखा कि संसार में सबसे कड़वी चीज़ मनुष्य की कटु वाणी है।

मान देने वाला ही माननीय

मीठा बोलने में किसी का कोई रुपया-पैसा नहीं लगता पर फिर भी बेसमझ बन गया इंसान कटु बोल द्वारा खुद भी दुखी होता है और दूसरों को भी दुख देने के निमित्त बन जाता है। कोई इंसान शक्ल-सूरत से खूबसूरत न होते हुए भी प्यार-सम्मान से बात करता है तो सबको प्यारा लगता है। इसके विपरीत, खूबसूरत इन्सान यदि वाणी से कर्कश है तो किसी को भी अच्छा नहीं लगता है। ईश्वर ने मनुष्य को ही बोलने का वरदान दिया है अत: मनुष्य का फर्ज है कि वह इस वरदान की कीमत समझे तथा कम बोले, धीरे बोले, मीठा बोले, जहाँ जरूरत है वहीं बोले, सार-युक्त बोले, पहले सोचे फिर बोले, सुखदाई बोल बोले, बोलते वक्त धैर्य रखे तथा छोटे-बड़े सबको सम्मान दे। सर्व को मान देने वाला ही सही अर्थों में माननीय है।

मीठी वाणी है औषधि

परमपिता परमात्मा का कहना है कि जब मधुर स्वभाव से जंगली जानवर को वश में कर सकते हैं तो क्या जंगली स्वभाव का मनुष्य वश में नहीं हो सकता? कोई कितना भी क्रोधी हो लेकिन मीठी एवं शांत वाणी के आगे वह भी शांत हो जाता है। मीठी वाणी एक ऐसी औषधि है जिससे दुश्मन को भी अपना बनाया जा सकता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा परमपिता परमात्मा स्वयं हमें बोलने की कला सिखा रहे हैं। यहाँ हमें पता चलता है कि हम सब इस शरीर को चलाने वाली चेतन शक्ति आत्माएँ हैं। एक-दूसरे के प्रति आत्मिक दृष्टिकोण रखने से हम हद के नाम, रूप, रंग, जाति, धर्म आदि से निकल कर बेहद में आ जाते हैं जिससे हमारे देखने एवं सोचने का स्तर भी ऊँचा हो जाता है, जो फिर हमारी व्यवहारिक बोलचाल से स्पष्ट नजर आता है। अत: 'वाणी द्वारा बस दुआयें दो, दुआयें लो और वाणी को सफल करो।' ❖

संजय की कलम से...पृष्ठ 3 का शेष..

'बीती को बिसार दें आगे की सुधि लें' – इसी भाव का वाचक है 'हो-ली'। परन्तु इस दिन तो कई लोग बीती हुई बात को याद करके बदला लेते हुए खूब एक-दूसरे के मुख पर बे-ढंग रीति से रंग मल देते, हुड़दंग मचाते हुए अपमानित करते तथा न करने योग्य व्यवहार करते हैं, तब भला इसका नाम 'हो-ली' कैसे हुआ?

सबसे बड़ी बात तो यह है कि 'हो + ली' का रंग के साथ क्या सम्बन्ध? वास्तव में तो ज्ञान रंग अथवा सत्संग ही का रंग ऐसा रंग है जिससे मनुष्य बीती को बिसार आगे के लिए अपने कर्मों को सुधार सकता है और हुई बात को मन से निकाल कर अब से अपने सम्बन्धी एवं परिचित व्यक्तियों से मन का नाता प्रेममय बना सकता है परन्तु यह कैसी अटपटी बात है कि ज्ञान का अथवा सत्संग का रंग डालने की बजाय लोग डालते हैं स्थूल रंग। मन को केसरिये या गुलाल में रंगने की बजाय वस्त्रों को रंगते हैं और कहते हैं 'होली' अर्थात् रंग लिया।

'उत्सव' शब्द तो ऐसे अवसर के लिए ही प्रयोग होता है जिससे मनुष्य की खुशी अथवा उसका उत्साह बढ़े। जिस कार्य को करने के बाद मनुष्य को यह पश्चाताप हो कि फलाँ व्यक्ति उससे नाराज हो गया होगा अथवा कि इतना रंग, इतने वस्त्र या इतना समय बेकार गया – उसे 'उत्सव' कहना भी तो भाषा की धज्जियाँ उड़ाना ही हुआ। भांग के गुलगुले खाकर स्वयं को भूल जाना ही यदि होली हो तो कबीर जी तो ऐसे 'उत्सव' को होली की बजाय 'भूल होली' ही कहेंगे। कबीर जी कहते हैं –

पत्थर पूजे हरि मिलें, तो मैं पूजूँ पहाड़,
ताते तो चाकी भली, पीस खाये संसार!

जैसे पत्थर को पूजने से हरि नहीं मिलते, उसी प्रकार वस्त्रों पर यह स्थूल रंग डालने से मंगल मिलन नहीं होता। सच्चा मंगल मिलन तो प्रभु-मिलन से होता है और प्रभु-मिलन आत्मा को ज्ञान-रंग में रंगने से होता है। ❖

बाबा ने सही सलामत घर पहुँचाया

ब्रह्माकुमारी रामदुलारी राठौर, भांडुप-पश्चिम (मुंबई)

मेरा जन्म रायबरेली जिले के एक छोटे-से गाँव में एक संपन्न परिवार में हुआ। घर में सभी भक्ति भावना वाले थे। मैं भी छोटेपन से ही बहुत भक्ति करती थी। बाद में मैं मुम्बई आ गई।

बेटा बना श्रवण

सन् 1994 में मेरे बेटे ने श्रवण बनकर मुझे कहा, माता जी, माउंट आबू (मधुबन) बहुत अच्छी जगह है, हम सब वहाँ पर जाएंगे। मैने कहा, आप जाओ, मैं घर पर ही रहूँगी लेकिन बेटे ने निवेदन किया कि आप भी हमारे साथ चलें। आखिर वो घड़ी आई, 2 मई को हम पूरे परिवार सहित आबू अब्बा के घर के लिए रवाना हो गए। जब मधुबन के आंगन में पैर रखा तो लगा कि मैं दूसरी दुनिया में आ गई हूँ। शाम को ओमशान्ति भवन में हमें दादी मनोहर इन्द्रा तथा शीलू बहन से परिचित कराया गया। ओमशान्ति भवन में लाल लाइट के बीच गीत बजा, 'मुझे जाना है अपने परमधाम।' उस समय एकदम शान्ति और प्रसन्नता का अनुभव हुआ। अगले दिन से हम सभी का ओमशान्ति भवन में कोर्स शुरू हुआ और कोर्स करते-करते मेरा अलौकिक जन्म हो गया। आने के एक दिन पहले दादी प्रकाशमणि जी आई और हम सबसे मिलीं। अपने हाथों टोली और सौगात दी। उस समय का दृश्य इतना अलौकिक था कि वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नही हैं।

अभी तक 32 बार मधुबन जा चुकी हूँ और बाबा से 20 बार मिलन मना चुकी हूँ। बाबा ने सेवाओं का चांस बहुत दिया। ड्रामा में निश्चय और बाबा से अटूट प्यार है। मैं अपने को कभी अकेला नहीं समझती। हर पल बाबा साथ रहते हैं। किसी भी प्रकार का विघ्न आता है तो घबराती नहीं हूँ। बाबा ने निर्विघ्न भव व विघ्नविनाशक भव का वरदान दिया हुआ है। बाबा के साथ का एक अनुभव सुनाती हूँ –

मैं और मेरा बाबा, तीसरा कोई नहीं

मैं कमरदर्द के इलाज के लिए थाना में एक फिजियोथेरेपिस्ट के पास जाती थी। जो ट्रेन थाना से शुरू होती है उसी से आती-जाती थी। एक दिन वापसी में काफी देर हो गयी। मैं प्लेटफार्म पर आई तो एकदम अंधेरा था और ट्रेन खड़ी थी। मैं उसमें बैठ गई। थोड़ी देर में ट्रेन चल पड़ी। लाइट भी आ गई। ट्रेन में मैं अकेली थी फिर भी भय की बजाय मन में यही संकल्प आया कि एक मैं और एक मेरा बाबा, तीसरा कोई नहीं। उसके बाद देखा कि ट्रेन ने ट्रैक बदल लिया और काफी दूर जाकर रुक गई। मैंने सोचा, यहाँ पर तो स्टेशन नहीं है फिर भी ट्रेन रुकी हुई है लेकिन मन में किसी प्रकार की शंका नहीं थी, निश्चिंत होकर बैठी थी। इतने में दो भाई आए, मुझे ट्रेन में बैठे हुए देख आश्चर्यचकित हो गए, बोले, ''यह ट्रेन तो वार्ड में आ गई है, आपको कहाँ जाना है?'' मैंने कहा, ''भांडुप जाना है।'' उन्होंने कहा, ''आप उतर जाओ, सही ट्रेन में बिठा देंगे।'' फिर उन्होंने बताया कि हम दोनों चालक और लाइटमैन हैं, हमें दूसरी तरफ से जाना था मगर आश्चर्य हो रहा है कि क्यों मन में आया कि इस तरफ से चलें। इस तरह वे मेरी सहायता के लिए पहुँच गए। मैं उतर नहीं पा रही थी, उन्होंने सहारा देकर मुझे ट्रेन से नीचे उतारा और फिर सही ट्रेन में बिठा दिया। मैं सकुशल घर पहुँच गई।

मुझे यही अनुभव हुआ कि बाबा का बच्चा जब मुसीबत में होता है तो बाबा खुद नहीं पहुँचते मगर किसी ना किसी को भेजकर सहायता करते हैं और मुसीबत से उबारते हैं। बाबा ने चालक और लाइटमैन को मेरी सहायता के लिए भेज दिया और मुझे सही सलामत घर पहुँचाया। इस घटना से मेरा निश्चय और पक्का हो गया। ❖

अभिमानी का अन्त

ब्रह्माकुमार सुभाष चन्द गुप्ता, नाँगलोई (दिल्ली)

मेरा जन्म 20 अक्टूबर, 1952 में पचगावा गाँव, जिला गुडगाँव (हरियाणा) में हुआ और सन् 1983 से नाँगलोई (दिल्ली) में रह रहा हूँ। मेरी युगल पिछले 21 सालों से ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र में जा रही हैं। उनसे प्रभावित होकर ही मैं भी ब्रह्माकुमारीज में जाने लगा हूँ। ब्रह्माकुमारीज का ज्ञान सीखने के लिए मुझे बहुत ज्यादा सोच-विचार करना पड़ा क्योंकि मेरे मन में लोगों ने भिन्न-भिन्न प्रकार की गलत भ्रान्तियाँ डाल रखी थीं जिस कारण मैं उस गली में ही नहीं जाता था जिस गली में आश्रम है। सबसे बड़ी भ्रान्ति, जो मेरे मन में बैठी हुई थी, यह थी कि यहाँ जाने से पति-पत्नी का पहले वाला प्यार नहीं रहता, वह फीका पड़ता जाता है। लेकिन एक दिन मैंने दिल की आवाज सुनी और निर्णय कर सुबह सात बजे आश्रम पहुँच गया। निमित्त बहन ने सात दिन का ईश्वरीय ज्ञान का कोर्स करवाया। अब रोजाना सुबह सात बजे मुरली सुनने आश्रम पहुँच जाता हूँ, कभी-कभी थोड़ा लेट भी हो जाता हूँ। मुरली क्लास के बाद अनेक बार मुझे अपने विचार व्यक्त करने का मौका मिला है। अब मैंने आश्रम की कार्यप्रणाली को काफी समझ लिया है और अनेक आत्माओं को ज्ञान देना शुरू कर दिया है। किसी भी पारिवारिक शुभ अवसर पर सर्वप्रथम शिव बाबा की शुभकामनाएँ अवश्य लेता हूँ। अपने अनुभव के साथ में एक प्रेरणादायक कहानी बताना चाहता हूँ –

एक जंगल में बांस के वृक्ष के साथ ही आम का पेड़ भी था। बांस का कद ऊँचा था और आम का छोटा। यह देख कर बांस अक्सर आम के वृक्ष का मजाक उड़ाता रहता और कहता, 'अरे आम, मैं तो कितना बड़ा हो चला, कितनी तेजी से बढ़ा और एक तुम हो, जो इतनी आयु होने पर भी छोटे ही बने हुए हो।' इस पर आम कहता, 'बांस, यह तो हर किसी की अपनी-अपनी प्रवृत्ति है। कोई छोटा होता है तो कोई बड़ा किंतु कद या शरीर विशाल होने से कुछ नहीं होता, काम भी विशाल और महान होने चाहिएँ। छोटा कद होने का यह अर्थ बिल्कुल नहीं है कि वह महान और बड़े काम नहीं कर सकता। इसी तरह लंबे या बड़े होने का यह अर्थ भी नहीं है कि वह छोटे काम को घृणा की नजर से देखे या उसे करने में अपना अपमान समझे।'

बांस को उसकी ये बातें समझ में नहीं आईं। वह बोला, 'तुम मेरे विशाल कद से जलते हो इसलिए मुझे ऐसी बातें सुना रहे हो, तुम छोटे कद के हो इसलिए छोटों को अच्छा बता रहे हो, अरे भला मैं छोटे काम क्यों करूँ?' कुछ समय बाद आम के वृक्ष पर बौर आया, फिर वह फलों से लद गया और झुक गया। बांस लंबा होकर सूखता चला गया किंतु उसका अभिमान अभी भी कम नहीं हुआ था। वह आम को देख कर बोला, 'अरे, मुझे देखो, मैं दूर से ही नजर आ जाता हूँ और एक तुम हो, फलों से लद कर झुके जा रहे हो और छोटे होते जा रहे हो।'

अभी उनकी बातें खत्म ही हुई थीं कि यात्रियों का एक झुंड वहाँ आया। आम के वृक्ष को फलों से लदा हुआ देख वे वहीं विश्राम करने लगे। रात होने पर ठंड से बचाव के लिए उन्होंने आग जलाने की सोची और पास ही खड़े बांस के वृक्ष को काट कर लकड़ियों का ढेर लगा दिया। आम का वृक्ष अभी भी शांत था और राहगीरों को अपनी छांव तले विश्राम दे रहा था जबकि अभिमानी बांस का अंत हो चला था। कहानी का सार यही है कि हमें किसी भी बात का अभिमान नहीं करना चाहिए। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
▸▸ E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

1.**राजकोट-** हैप्पी विलेज रिट्रीट सेन्टर के लिए भूमि शुद्धिकरण करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु.भारती बहन, ब्र.कु.हंसा बहन तथा ब्र.कु.अंजू बहन। 2.**दिल्ली (सिविल लाइन्स)-** उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता सुनील गौड़ तथा उनकी धर्मपत्नी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मीरा बहन। 3.**गांधीनगर-**राजयोगिनी दादी जानकी जी के अभिनंदन के लिए आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु.सरला बहन, गुजरात इलेक्शन कमिशन सेक्रेटरी भ्राता महेश जोशी, समाजसेवक प्रवीण भाई मोरी, ब्र.कु.कैलाश बहन, ब्र.कु.रंजन बहन तथा अन्य। 4.**रानियाँ-** हरियाणा के मुख्यमंत्री भ्राता मनोहरलाल खट्टर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.कमलेश बहन तथा ब्र.कु.नीलू बहन। 5.**भोपाल-** मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता शिवराज सिंह चौहान को हैम रेडियो की सिल्वर जुबली महोत्सव की सोविनियर बुक भेंट करते हुए ब्र.कु.अवधेश बहन तथा ब्र.कु.रानी बहन। 6.**जम्मू-** केन्द्रीयविज्ञान तथा प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) भ्राता जितेन्द्र सिंह राणा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुदर्शन बहन। 7.**भैरहवा-** नेपाल के लिए भारतीय राजदूत भ्राता रंजीत रे को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शान्ति बहन। 8.**दिल्ली (स्वास्थ्य विहार)-** केन्द्रीय सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्री भ्राता सदानंद गौड़ा को ईश्वरीय साहित्य देते हुए ब्र.कु.उर्मिला बहन। 9.**लखनऊ (जानकीपुरम)-** उत्तर प्रदेश के कैबिनेट मंत्री भ्राता अभिषेक मिश्रा को ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र.कु.सुमन बहन। 10.**चित्तौड़गढ़ (निम्बाहेड़ा)-** शिवध्वजारोहण के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में हैं राजस्थान के शहरी विकास मंत्री भ्राता श्रीचन्द कृपलानी, ब्र.कु.आशा बहन तथा अन्य। 11.**कोटद्वार (पौड़ी गढ़वाल)-** उत्तराखंड के स्वास्थ्य मंत्री भ्राता सुरेन्द्र सिंह नेगी प्रात:कालीन क्लास में अपना अनुभव सुनाते हुए। साथ में उनकी धर्मपत्नी तथा ब्र.कु.ज्योति बहन। 12.**नीमच-** मध्यप्रदेश के ऊर्जा मंत्री भ्राता पारसचन्द्र जैन के सेवाकेन्द्र पधारने पर आत्मस्मृति का तिलक देकर स्वागत करते हुए ब्र.कु.सविता बहन। साथ में ब्र.कु.सुरेन्द्र भाई।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2015-2017 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2015-2017. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : March, 2017.

नई दिल्ली (तालकटोरा स्टेडियम)- पिताश्री ब्रह्मा की पुण्यतिथि पर आयोजित 'विश्व बंधुत्व दिवस' कार्यक्रम के बाद समूह चित्र में ब्र.कु.आशा बहन, भाजपा के वरिष्ठ नेता भ्राता लालकृष्ण अडवाणी तथा अन्य।

शान्तिवन (आबूरोड)- व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, ब्र.कु.गीता बहन, ब्र.कु.योगिनी बहन, कोल्हापुर के प्रसिद्ध उद्योगपति अन्ना साहेब चाकोटे, व्यवसायी भ्राता जगमोहन अग्रवाल तथा अन्य।

शान्तिवन (आबूरोड)- 'स्व सशक्तिकरण के लिए ईश्वरीय ज्ञान' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मध्यप्रदेश के ऊर्जा मंत्री भ्राता पारसचन्द्र जैन, जगद्गुरु कृपालु यूनिवर्सिटी, कटक के उप-कुलपति डॉ.एस.रामरत्नम, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, ब्र.कु.डॉ.निर्मला बहन, ब्र.कु.निर्वैर भाई, ब्र.कु.शशि बहन तथा ब्र.कु.भरत भाई।

दिल्ली (हरिनगर)- राजयोगिनी ब्र.कु.शुक्ला बहन के निमित्त प्लेटिनम जुबली कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.शुक्ला बहन, ब्र.कु.सुंदरलाल भाई, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, प्रज्ञापीठ के शंकराचार्य स्वामी ओंकारानंद जी, राजयोगिनी दादी कमलमणि जी, ब्र.कु.चक्रधारी बहन, ब्र.कु.अमीरचंद भाई तथा अन्य।